सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 163, नई दिल्ली । शुक्रवार, 23 अगस्त 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जब तक जीना, तब तक सीखना, अनुभव ही जीवन में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।

03 दिल्ली के हेल्थ प्रोफेशनल ने निकाला न्याय मार्च
06 खेल भावना में 'राष्ट्र प्रथम' सर्वोपरि रहे
08 कुलपति प्रो करुणेश सक्सेना ने दिए सफलता के मंत्र

दिल्ली-एनसीआर में कैसा रहा ऑटो-टैक्सी हड़ताल का असर? कई जगह हुई तोड़फोड़; आज के लिए हुआ बड़ा एलान

संजय बाटला

राजधानी में गुरुवार को ऑटो व टैक्सी चालकों की हड़ताल का मिलाजुला असर रहा। कहीं ऑटो को रोका गया तो कहीं पर तोड़फोड़ की छिटपुट घटना भी हुई। ऑटो संगठन का कहना है कि इसका असर शुक्रवार को ज्यादा देखने को मिलेगा। संगठन की ओर से 22 और 23 अगस्त को हड़ताल करने का एलान किया गया था।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में दो दिवसीय ऑटो, टैक्सी व कैब सेवा हड़ताल का मिलाजुला असर रहा। पहले दिन गुरुवार को सड़कों पर ये यात्री वाहन चल तो रहे थे, लेकिन उनकी संख्या कम रही, जिसके कारण कामकाजी लोगों को मुश्किलों का सामना करना पड़ा।

वहीं, कुछ स्थानों पर चलते ऑटो-टैक्सी को रोकने व तोड़फोड़ की छिटपुट घटना भी हुई। इस बीच, आंदोलनकारी संगठनों से जुड़े चालकों ने जंतर-मंतर पर धरना प्रदर्शन किया और खासकर ऐप बेस्ड कैब सेवा प्रदाता कंपनियों पर लगाम लगाने की मांग की।

80 प्रतिशत ऑटो-टैक्सी व कैब सेवा रही प्रभावित

आंदोलन का आह्वान करने वाली ऑल दिल्ली ऑटो टैक्सी ट्रांसपोर्ट कांग्रेस यूनियन के अध्यक्ष किशन वर्मा ने दावा किया कि आंदोलन में दिल्ली-एनसीआर के 15 से अधिक संबंधित संगठन जुड़े रहे, जिससे 80 प्रतिशत ऑटो, टैक्सी व कैब सेवा प्रभावित रही।

वहीं, शुक्रवार को हड़ताल के अंतिम दिन यह असर अधिक होगा। जबकि कुछ यात्रियों ने एक्स पोस्ट में आंदोलनकारियों द्वारा उनके ऑटो को रोककर उन्हें बीच रास्ते उतारने व कुछ ने ऐप बेस्ड कैब सेवा न मिलने की शिकायत की।

हड़ताल का असर न्यूनतम रहा

कांस्टीट्यूशन क्लब के नजदीक मिले ऑटो चालकों राजबीर सिंह ने बताया कि आम दिनों की तुलना में करीब 40 प्रतिशत कम यात्री वाहन सड़कों पर उतरे हैं। इस बीच, हड़ताल से दूरी बनाने वाले दिल्ली ऑटो रिक्शा संघ व दिल्ली प्रदेश टैक्सी यूनियन के महामंत्री राजेंद्र सोनी ने दावा किया कि हड़ताल का असर न्यूनतम रहा है।

रेलवे स्टेशन व एयरपोर्ट समेत अन्य महत्वपूर्ण स्थानों के टैक्सी व ऑटो संगठन हड़ताल से दूर रहे हैं। यह हड़ताल बाइक टैक्सियों पर रोक और प्रतिबंधित सड़कों पर ई-रिक्शा का परिचालन रोकने के साथ ऐप बेस्ड कैब कंपनियों द्वारा चालकों के शोषण पर लगाम लगाने की मांग को लेकर है।

ये हैं संगठनों की मांगें

जंतर-मंतर पर कैब चालक अनिल प्रधान ने गैर-व्यावसायिक नंबर प्लेट का उपयोग करके सेवाएं देने वाली बाइक टैक्सियों पर प्रतिबंध लगाने की मांग की। उन्होंने कहा कि उसके धड़ल्ले से चलने से उन लोगों का गुजारा मुश्किल हो रहा है। एक अन्य कैब चालक आदर्श तिवारी ने कहा कि कंपनियां हमें हमारी सेवाओं के लिए बहुत कम दर प्रदान करती हैं। इसके कारण, हम अपने वाहनों की किस्तों का भुगतान करने और अन्य खर्चों को पूरा करने में मुश्किलें आती हैं।

दिल्ली मेट्रो के नाम फिर नया रिकॉर्ड, मालामाल हुआ डीएमआरसी; कैसे होती है पैसेंजर जर्नी की गणना?

दिल्ली मेट्रो ने एक बार फिर से अपना पुराना रिकॉर्ड तोड़ा है। 20 अगस्त को 77 लाख से ज्यादा यात्रियों ने मेट्रो ट्रेन में सफर किया है। इससे पहले एक दिन में 71 लाख से ज्यादा यात्रियों ने सफर किया था। मेट्रो ने एक साल में चौथी बार रिकॉर्ड तोड़ा है। पढ़िए पैसेंजर जर्नी की गणना कैसे होती है?

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो में एक दिन में सबसे अधिक यात्रियों के सफर करने का रिकॉर्ड फिर से टूट गया है। इस माह में तीसरी बार यह रिकॉर्ड टूटा है।

13 अगस्त को सर्वाधिक 71.09 लाख यात्रा हुई थी

डीएमआरसी के अनुसार, 13 अगस्त को सर्वाधिक 71.09 लाख यात्रा (पैसेंजर जर्नी) हुई थी। 20 अगस्त को यह संख्या 77.48 लाख से अधिक पहुंच गई। किसी यात्री द्वारा मेट्रो बदलने के आधार पर पैसेंजर जर्नी की गणना होती है। डीएमआरसी के मुताबिक, यदि कोई यात्री मेट्रो बदलकर दूसरे कॉरिडोर में यात्रा करता है तो उसकी गिनती दो बार होती है। तीन कॉरिडोर में यात्रा करने पर तीन बार गिनती की जाती है।

चौथी बार टूटा है यह रिकॉर्ड

दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने सोशल मीडिया पर मेट्रो में यात्रियों के सफर का रिकॉर्ड टूटने की जानकारी दी है। इस माह में तीसरी बार वर्ष में चौथी बार यह रिकॉर्ड टूटा है। पिछले वर्ष जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान चार सितंबर को सर्वाधिक यात्रा हुई थीं। इसके बाद 12 फरवरी व 13 फरवरी को रिकॉर्ड टूटा था। मेट्रो के तीसरे चरण के सभी कॉरिडोर चालू होने से यात्रियों की संख्या बढ़ी है।

पांच सर्वाधिक मेट्रो यात्रा

तिथि	सर्वाधिक यात्रा
20 अगस्त, 2024	77,48,838
13 अगस्त, 2024	72,38,271
13 फरवरी,2024	71,09,938
12 अगस्त,2024	71,07,642
04 सितंबर, 2023	71,04,338

एक ही ऐप से खरीदें दिल्ली मेट्रो और नमो भारत का टिकट; क्या होंगे ये फायदे?

दिल्ली मेट्रो और नमो भारत ट्रेन में यात्रा करने वालों के लिए एक बड़ी खुशखबरी है। अब आपको अलग-अलग टिकट का झंझट नहीं झेलना पड़ेगा। क्योंकि NCRTC और DMRC ने जनता की सुविधा के लिए एक अहम समझौता किया है। अब आपको मेट्रो और नमो भारत ट्रेन का अलग-अलग टिकट नहीं लेना पड़ेगा। मोबाइल ऐप से QR Ticket बुक किया जा सकता है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी NCRTC) और दिल्ली मेट्रो Delhi Metro रेल कार्पोरेशन (डीएमआरसी DMRC) ने यात्रियों की सुविधा के लिए बुधवार को एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते से यात्रियों का बहुत समय बचेगा। क्योंकि अब एक ही स्टेशन से मेट्रो और नमो भारत का QR Ticket खरीदा जा सकेगा।

इससे एनसीआर के निवासियों को आसान यात्रा की सुविधा मिलेगी। यह सहयोग "वन इंडिया-वन टिकट" One India One Ticket Book पहल के अनुरूप है, जिससे यात्रियों को एक ही प्लेटफॉर्म पर नमो भारत और दिल्ली मेट्रो, दोनों सेवाओं के लिए क्यूआर कोड टिकट बुक करने की सुविधा मिलेगी।

एनसीआरटीसी के प्रबंध निदेशक श्री शलभ गोयल और डीएमआरसी के प्रबंध निदेशक डॉ. विकास कुमार की उपस्थिति में एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए।

DMRC मोबाइल एप से नमो भारत ट्रेन टिकट भी लिया जा सकता है

इस एकीकरण के अंतर्गत आरआरटीएस कनेक्ट एप से नमो भारत ट्रेन टिकट बुक करने वाले यात्री उसके साथ दिल्ली मेट्रो टिकट भी खरीद सकते हैं। इसी तरह, मेट्रो टिकट बुक करने के लिए डीएमआरसी मोबाइल एप से नमो भारत ट्रेन टिकट भी लिया जा सकता है।

इस सहयोग से आरआरटीएस कनेक्ट ऐप पर दिल्ली मेट्रो क्यूआर कोड और डीएमआरसी मोबाइल ऐप पर नमो भारत क्यूआर कोड तैयार होंगे, जिससे यात्रियों का अनुभव काफी बेहतर हो जाएगा।

क्या होंगे फायदे?

1. एक ही ऐप से दोनों ट्रेनों के टिकट खरीदने से यात्रियों के बहुमूल्य समय की बचत होगी।
2. स्टेशनों पर यात्रियों को लाइन में नहीं लगना पड़ेगा।
3. डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा मिलेगा।

दिल्ली में निजी वाहनों की सबसे बड़ी समस्या होगी खत्म

1 नवंबर से पार्किंग के लिए लागू होगी एक समान दर की नीति

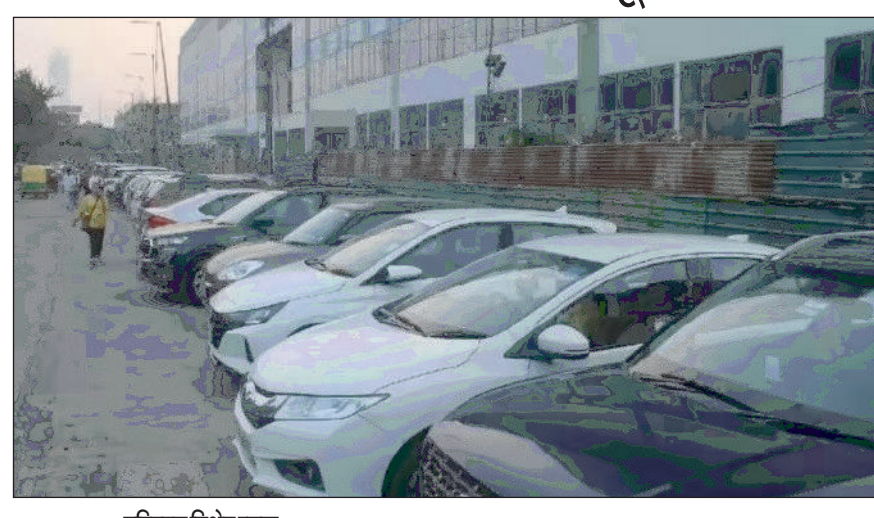

- सीएक्यूएम ने इसे लेकर नगर निगम आयुक्त, एनडीएमसी अध्यक्ष और दिल्ली कैंट बोर्ड के सीईओ को लिखा पत्र
- परिवहन आयुक्त और अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (यातायात) को भी इसके लागू होने के बाद जरूरी

परिवहन विशेष न्यूज

एक नवंबर से राजधानी में सभी स्थानों पर निजी वाहनों के लिए पार्किंग दर एक समान होगी। सीएक्यूएम के सदस्य सचिव अरविंद नोटियाल ने इसे लेकर निगम आयुक्त एनडीएमसी अध्यक्ष और दिल्ली कैंट बोर्ड के सीईओ को पत्र लिखा है। साथ ही परिवन आयुक्त और अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (यातायात) को भी इसके लागू होने के बाद जरूरी एक्शन लेने को कहा गया है।

नई दिल्ली। एक नवंबर से राजधानी में सभी स्थानों पर निजी वाहनों के लिए पार्किंग दर एक समान होगी। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने नगर निगम, नई दिल्ली नगर पालिका परिषद और दिल्ली कैंटोनमेंट बोर्ड को 30 सितंबर तक इसकी रूपरेखा तय करने के निर्देश दिए हैं।

सीएक्यूएम के सदस्य सचिव अरविंद नोटियाल ने इसे लेकर निगम आयुक्त, एनडीएमसी अध्यक्ष और दिल्ली कैंट बोर्ड के सीईओ को पत्र लिखा है। साथ ही परिवन आयुक्त और अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (यातायात) को भी इसके लागू होने के बाद जरूरी एक्शन लेने को कहा गया है।

दिल्ली में वर्ष भर प्रदूषण बना रहता

गौरतलब है कि वैसे तो अब दिल्ली में वर्ष भर प्रदूषण बना रहता है। लेकिन, जाड़े के दिनों में लोगों को सबसे ज्यादा प्रदूषित हवा में सांस लेनी पड़ती है। दिल्ली के प्रदूषण में वाहनों से निकलने वाले धुएं की बड़ी भागीदारी होती है। इसलिए प्रदूषण नियंत्रण के लिए वाहनों के संचालन के लिए भी अलग-अलग प्रतिबंध लगाया जाता है।

पार्किंग दरों में बढ़ोतरी करने के भी निर्देश

खासतौर पर ग्रेप लागू होने के साथ ही इसके अलग-अलग चरणों में वाहनों के लिए अलग-अलग पाबंदियों के प्रावधान हैं। जबकि, वाहनों की संख्या सीमित करने के लिए पार्किंग दरों में बढ़ोतरी करने के भी निर्देश दिए गए हैं। इसी क्रम में सीएक्यूएम ने राजधानी में सभी जगहों पर निजी वाहनों के लिए पार्किंग दरों को तार्किक बनाने के निर्देश दिए हैं।

30 सितंबर तक इसका प्रस्ताव देने के निर्देश

सीएक्यूएम ने कहा है कि उसके द्वारा अप्रैल माह में जारी निर्देश में 30 अगस्त तक इस संबंध में रूपरेखा देने को कहा गया था। हालांकि, अभी तक इस तरह का प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुआ है। ऐसे में सीएक्यूएम ने अब कहा है कि नगर निगम, एनडीएमसी और छावनी परिषद की ओर से 30 सितंबर तक इसका प्रस्ताव अवश्य दे दिया जाए। ताकि एक नवंबर से इसे पूरी दिल्ली में लागू किया जा सके।

वाहनों का इस्तेमाल कम करने के लिए पार्किंग चार्ज बढ़ाने का प्रस्ताव

वैसे ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) के दूसरे चरण के इमरजेंसी रिस्पांस प्लान में भी यह नियम है कि सर्दियों के दौरान प्रदूषण के चलते लोगों को निजी वाहनों का इस्तेमाल कम करने के लिए प्रेरित करने को पार्किंग चार्ज बढ़ाए जाएं। हालांकि सीएक्यूएम के अनुसार इन सबके बावजूद दिल्ली में अभी तक पार्किंग दरों में कोई बदलाव नहीं किया गया। 2023-24 की सर्दियों के दौरान ग्रेप के दूसरे चरण में भी एनडीएमसी के अलावा कोई अन्य एजेंसी यह नियम लागू नहीं कर पाई थी।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली में किन रूटों पर चलेंगी मोहल्ला बसें? कैलाश गहलोत ने विधायकों से मांगी राय

दिल्ली में लास्ट-माइल कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने के लिए जल्द ही सड़कों पर मोहल्ला (छोटी इलेक्ट्रिक) बसें सड़कों पर दौड़ने वाली हैं। अब इसको लेकर परिवहन विभाग और मंत्री कैलाश गहलोत ने विधायकों से सुझाव मांगे हैं कि किन रूटों पर इन बसों को चलाया जाए। राजेंद्र नगर से विधायक दुर्गेश पाठक ने अपने यहां के तीन रूट दिए हैं।

नई दिल्ली। हाल ही में लांच की गई मोहल्ला बस सेवा को लेकर परिवहन विभाग अब इसके रूट निर्धारण में लगा है। इन्हें किन रूटों पर चलाया जाए, इसके लिए विभाग ने विधायकों से भी सुझाव मांगे हैं ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों को इसका लाभ मिल सके।

मोहल्ला बसें नौ मीटर लंबी

परिवहन अधिकारियों ने बताया कि मोहल्ला बसें नौ मीटर लंबी हैं, जिन्हें ऐसी जगहों पर कनेक्टिविटी के लिए शुरू किया गया है, जहां मौजूदा बसें नहीं जा पातीं। कई विधायकों ने ऐसे इलाके बताए हैं, जिन्हें मोहल्ला बस के रूट में शामिल किया जा सके।

परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत के मुताबिक कई विधायकों से सुझाव मिले हैं। (मुख्यमंत्री) अरविंद केजरीवाल सरकार मोहल्ला बसों के लिए सबसे बेस्ट रूट बनाने के लिए सुझावों को एक साथ करने की कोशिश करेगी।

विधायकों द्वारा दिए गए सुझावों के अनुरूप ही रूट को अंतिम रूप दिया जाएगा। विधायक क्षेत्रों और अपने एरिया में सार्वजनिक परिवहन की जरूरतों को अच्छी तरह से जानते हैं और उनके सुझावों से बसों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग हो सकेगा।

राजेंद्र नगर के विधायक दुर्गेश पाठक ने कहा

"लास्ट-माइल कनेक्टिविटी पर लोगों की दैनिक कमाई का एक बड़ा हिस्सा रोजाना कार्यालय आने-जाने में खर्च हो डाता है। मैंने अपने निर्वाचन क्षेत्र में तीन रूट सुझाए हैं, जिससे हर दिन करीब एक लाख यात्रियों को फायदा होगा।"

पाठक द्वारा सुझाए गए रूट का मकसद उनके निर्वाचन क्षेत्र के विभिन्न आबादी वाले इलाकों को मेट्रो स्टेशनों से जोड़ना है। पाठक के सुझावों में इंद्रपुरी को नारायणा मेट्रो और मायापुरी से जोड़ना और बुद्ध नगर, टोडापुर और दशघरा सहित अन्य क्षेत्रों को जोड़ना शामिल है। उन्होंने कहा कि हाल ही में राजेंद्र नगर में रूट का वेरिफिकेशन किया गया था।

मालूम हो कि मोहल्ला बस योजना का मकसद पड़ोस आस-पास या फीडर सेवाओं के लिए नौ मीटर लंबी इलेक्ट्रिक बसें शुरू करना है, जिसमें 2025 तक 2180 बसें बेड़े में शामिल की जाएंगी। यह योजना सीमित सड़क चौड़ाई या रिकॉर्ड भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों पर केंद्रित है।

नारद जी ने कैसे पर्वतराज और मैना को समझाने का प्रयास किया?

जब ऐसा पर्वतराज एवं माता मैना ने सुना, तो उनके लिए यह भयंकर दुख के समान था। उन्होंने तो बड़े लाड़ प्यार से अपनी पुत्री को पाला पोसा था। घर में संतों का सदा से ही सम्मान किया था। कभी अधर्म पर चलने की सोची भी नहीं थी।

श्रीनारद जी ने तो वचन कर दिये, कि जो-जो अवगुण से प्रतीत होने वाले अनिष्ट से लक्षण, श्रीपार्वती जी के पति में हैं, वे सब तो भगवान शंकर जी में दृष्टिपात हो रहे हैं। तो क्यों न श्रीपार्वती जी अपना संपूर्ण समर्पण, प्रेम व तप भगवान शंकर जी की आराधना में लगायें।

जब ऐसा पर्वतराज एवं माता मैना ने सुना, तो उनके लिए यह भयंकर दुख के समान था। उन्होंने तो बड़े लाड़ प्यार से अपनी पुत्री को पाला पोसा था। घर में संतों का सदा से ही सम्मान किया था। कभी अधर्म पर चलने की सोची भी नहीं थी। किंतु फिर भी अपनी बेटी के भविष्य में, इस भयंकर गिरावट के संकेत देख कर, उनका मन ही टूट गया था। किंतु तब भी पर्वतराज का मन पत्नी मैना की भाँति हारा नहीं था। उनका विश्वास मानों पर्वत की भाँति ही था। जब उन्होंने देखा, कि बेटी के संबंध में की गई भविष्यवाणी एक पूर्ण संत ने की है, तो वे समझ गये, कि मुनि के वचन तो अटल हैं। उन्हें नहीं टाला जा सकता। किंतु तब भी हमें यहाँ वहाँ समाधान न ढूंढ कर, मुनि से ही समाधान प्राप्त करना चाहिए। जिसका परिणाम यह निकला, कि श्रीपार्वती जी के भावी पति में जो गुण एक मूर्ख व्यक्ति के हो सकते थे, वे सभी गुण तो साक्षात भगवान के भीतर दृष्टिपात होने लगे थे। जो दृष्टियाँ अभी तक किसी बहते नाले को गंदा मान कर चल रहे थे, वही नाला उन्हें साक्षात गंगा जी प्रतीत होने लगा।

श्रीनारद जी ने कहा भी, कि हे पर्वतराज! आपको निश्चित ही चिंता करने की आवश्यक्ता नहीं है। क्योंकि भगवान विष्णु का आसन कौन सा उत्तम है? वे भी तो शेषनाग की शैय्या पर ही सोते हैं। किंतु पंडित लोग तब भी उनकी निंदा नहीं करते। सूर्य एवं अग्निदेव अच्छे-बुरे सभी रसों का भक्षण करते हैं, किंतु कभी सुना है कि कोई उन्हें बुरा कहे-

'जौं अहि सेज सयन हरि करहीं।
बुध कछु तिन्ह कर दोषु न धरहीं।।
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं।
तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं।।'

ऐसे ही गंगा जी में शुभ और अशुभ सभी जल बहता है, पर कोई उन्हें अपवित्र अथवा मलिन नहीं कहता। सूर्य, अग्नि और गंगाजी की भाँति समर्थ को कभी कुछ दोष नहीं होता। इस प्रकार श्रीनारद जी ने अनेकों उदाहरणों के माध्यम से पर्वतराज व मैना सहित सबको समझाने का प्रयास किया।

ऐसा कहकर श्रीनारद जी तो ब्रह्मलोक चले गये, और पीछे से मैना अपनी पुत्री को लेकर अत्यंत चिंताग्रस्त हो गई। किंतु पर्वतराज अभी भी कितनी अच्छी बात कहते हैं-

'बरु पावक प्रगटै ससि माहीं।
नारद बचनु अन्यथा नाहीं।।'

जब व्यक्ति के मन में संतों के प्रति ऐसा विश्वास व निष्ठा हो, तो वह जीव अशाँत हो ही नहीं सकता। हिमवान राजा ही, जैसे कैसे भी अपनी संतानों की आवश्यक्तायों की पूर्ति करते हैं। क्या गोद में बैठा बच्चा चिल्ला-चिल्ला कर कहता है, कि मुझे यह वस्तु चाहिए, अथवा वह वस्तु चाहिए?

ठीक ऐसे ही श्रीहरि ने हमारी सृजना की है। वे ही हमारे माता पिता हैं। हम उनकी संतानें हैं। हमें कब क्या चाहिए, व किसमें हमारा हित-अहित छुपा है, श्रीहरि से बेहतर भला कौन जान सकता है? तो क्यों न हिमवान के चरित्र से हम जीव भी सीखें, कि हिमवान केवल ठोस पर्वतों का ही रहने वाला नहीं था, अपितु ईश्वर के प्रति उनका विश्वास भी उतना ही ठोस व दृढ़ था।

हिमवान तो स्थिर थे, किंतु मैना का मन ठहर नहीं रहा था। रह-रह कर व्याकुल हो रहा था। जिसका केवल एक ही कारण था, कि वह मोह के भँवर में फँस कर, अपना संपूर्ण व्यवहार कर रही थी। जिस कारण उसे सब ओर विपरीत ही दिखाई पड़ रहा था। जैसे उसने लाड़ होकर भी चिंता नहीं कर रहे। सब कुछ भगवान पर टाल रहे हैं। तो क्या हम साधारण मनुष्यों को इतना व्याकुल व तनावग्रस्त होना चाहिए? हिमवान की मनःस्थिति देखिए, वे बड़े सहज भाव से कहते हैं-

'प्रिया सोचु परिहरहु सबु सुमिरहु श्रीभगवान।
पारबतिहि निरमयउ जेहिं सोइ करिहि कल्यान।।'

अर्थात हे प्रिये! सब सोच छोड़कर श्रीभगवान का स्मरण करो, जिन्होंने पार्वती को रचा है, वे ही कल्याण करेंगे।

वाह! प्रसन्न रहने का कितना बड़ा सूत्र है। वे कहना चाह रहे हैं, कि जैसे हम अपनी संतानों को उत्पन्न व जन्म देते हैं, तो उनके लालन पालन की जिम्मेदारी, हमारे ही कंधों पर तो होती है। हम स्वयं में आकर श्रीपार्वती जी को अपनी गोद में बिठा लिया। मैना को लग रहा था, कि वह पार्वती जी की माँ है, तो अपनी बच्ची को गोद में बिठाकर ढांढस बँधाती हुँ। किंतु वह क्या जानें, कि जिसे उसने अपनी गोदी में बच्चों की भाँति बिठा लिया है, वह उसकी बच्ची नहीं, अपितु संपूर्ण जगत की माँ के साथ-साथ, उसकी भी माँ है।

लेकिन यह कैसे समझ आता है? ऐसे विवेक की प्राप्ति के लिए तो, हिमवान की भाँति संतों महापुरुषों की शरणागत होना पड़ता है।

श्रीपार्वती जी इसके पश्चात तप के लिए घनों वनों में निकल पड़ती हैं। वे कैसे-कैसे तप करती हैं, इसकी चर्चा हम अगले अंक में करते हैं---(क्रमशः)---जय श्रीराम।

रीयलमी 13+ 5G स्मार्टफोन जल्द होगा लॉन्च, मिलेंगे GT गेमिंग फीचर्स और 26 GB तक की डायनेमिक रैम

Realme 13+ 5G सीरीज 29 अगस्त को लॉन्च होंगे। इस दौरान सीरीज के दो मॉडल Realme 13 5G और Realme 13+ 5G पेश किए जाएंगे। कंपनी इससे पहले Realme 13 Pro लाइनअप को लॉन्च कर चुकी है। Realme ने अपने अपकमिंग स्मार्टफोन की लॉन्च डेट के बाद कंपनी ने Realme 13+ 5G की कुछ स्पेसिफिकेशन्स को बताया है।

भारत में Realme 13+ 5G सीरीज आगामी 29 अगस्त को लॉन्च होंगे। इस दौरान सीरीज के दो मॉडल Realme 13 5G और Realme 13+ 5G पेश किए जाएंगे। कंपनी इससे पहले Realme 13 Pro लाइनअप को लॉन्च कर चुकी है। Realme ने अपने अपकमिंग स्मार्टफोन की लॉन्च डेट के बाद कंपनी ने Realme 13+ 5G की कुछ स्पेसिफिकेशन्स को बताया है।

Realme 13+ 5G को लेकर कंपनी पहले ही कह चुकी है कि इसमें Mediatek Dimensity 7300 energy SoC मिलेगा। चिपसेट एडवांस 4nm प्रोसेस टेक्नोलॉजी पर बना है, जो पिछले जेनेरेशन के मुकाबले 30 प्रतिशत ज्यादा एनर्जी देगा।

वहीं Realme का कहना है कि इस अपकमिंग फोन में कॉल ऑफ ड्यूटी, बीजीएमआई, फ्री फायर जैसे गेम्स 90Fps पर रन करेंगे। दमदार परफॉर्मेंस के लिए फोन मीडियाटेक के इस प्रोसेसर के साथ 26GB तक की डायनेमिक रैम सपोर्ट करेगा।

इसके साथ ही Realme 13+ 5G स्मार्टफोन TUV SUD लैग-फ्री मोबाइल गेमिंग एक्सपीरियंस ऑफर भी करेगा। बता दें कि, ये दुनिया का पहला फोन है, जो S-लेवल की स्मूथनेस और परफॉर्मेंस रेटिंग के साथ आएगा।

इस फोन में 6050mn2 वैपोर कूलिंग एरिया है, जो पिछले मॉडल की तुलना में 37 गुना बड़ा है। Realme 13 सीरीज के स्मार्टफोन को Realme की ऑफिशियल वेबसाइट, फ्लिपकार्ट और ऑफलाइन स्टोर से खरीद सकते हैं।

रियलमी के अपकमिंग स्मार्टफोन जीटी गेमिंग फीचर के साथ लॉन्च किए जाएगा। इनमें Geek Power Tuning फीचर है, जो पीक परफॉर्मेंस के दौरान CPU और GPU की फ्रीक्वेंसी को एडजेस्ट करता है। इसके साथ ही लोड टाइम को कम करने के लिए क्विक स्टार्टअप रैपिडली फीचर मिलेगा। फोन में डेडिकेटेड गेमिंग मैमोरी दी गई है, जो बैकग्राउंड में चल रहे 7 गेम्स के अपडेट्स को सपोर्ट करेगा। गेमिंग विजुअल्स को इन्हेंस करे के लिए गेम फिल्टर दिया गया है।

आप भी नहीं लेते 8 घंटे की नींद, तो बढ़ सकता है गंभीर बीमारियों का खतरा

जो लोग कम नींद लेते हैं, उनमें अधिक बीमारियों का खतरा होता है। खासतौर पर ऐसे लोगों को हाई बीपी और मानसिक बीमारियों का अधिक खतरा रहता है। जिसका असर शरीर के अन्य अंगों पर देखने को मिलता है।

हमारे शरीर और दिमाग के स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त नींद लेना बहुत जरूरी होता है। इसलिए कहा जाता है कि कम से कम 7-8 घंटे की नींद जरूर लेनी चाहिए। क्योंकि खराब नींद कई बड़ी बीमारियों का कारण होती है। वहीं नींद की कमी से शरीर पर कई नकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं। जो लोग कम नींद लेते हैं, उनमें अधिक बीमारियों का खतरा होता है।

खासतौर पर ऐसे लोगों को हाई बीपी और मानसिक बीमारियों का अधिक खतरा रहता है। जिसका असर शरीर के अन्य अंगों पर देखने को मिलता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि 8 घंटे की पर्याप्त नींद न लेने पर व्यक्ति को क्या-क्या दिक्कतें हो सकती हैं।

थकान और ऊर्जा में कमी

पर्याप्त नींद न लेने पर शरीर में एनर्जी की कमी रहती है। जिसके कारण आप पूरा दिन थका हुआ महसूस करते हैं। इससे आपका काम भी प्रभावित होता है। शरीर में एनर्जी की कमी अंगों के कार्यक्षमता पर असर डालती है। जिसकी वजह से हमारा किसी काम में मन नहीं लगता है।

ब्रेन फंक्शन में समस्या

बता दें कि नींद की कमी आपके ब्रेन फंक्शन पर भी बुरा असर डालती है। इससे आपको ध्यान केंद्रित करने में समस्या होती है। नींद की कमी की वजह से आपके सोचने व समझने की क्षमता कम हो सकती है।

मूड स्विंग

नींद की कमी से चिड़चिड़ापन, मूड स्विंग, तनाव और डिप्रेशन जैसी समस्या हो सकती है। वहीं स्ट्रेस हमारी सेहत के लिए अच्छा नहीं होता है, इससे कई अन्य गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। वहीं जब आप पर्याप्त नींद नहीं लेते हैं, तो इसका असर आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली पर पड़ता है।

हार्ट के लिए नुकसानदेह

नींद की कमी आपके दिल की सेहत को भी नुकसान पहुंचा सकता है। जिससे दिल का दौरा, उच्च रक्तचाप और स्ट्रोक जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। नींद की कमी से हाई बीपी का खतरा बढ़ जाता है, जिसका आपके दिल पर बुरा असर पड़ता है।

स्लो होता है मेटाबॉलिज्म

जब नींद नहीं पूरी होती है, तो भूख बढ़ाने वाले हार्मोन की मात्रा बढ़ जाती है और मेटाबॉलिज्म स्लो होता है। वहीं ज्यादा भूख लगने से आप ओवर ईटिंग करते हैं, जिससे वेट बढ़ने की संभावना बढ़ जाती है।

हेरंब संकष्टी चतुर्थी पर ऐसे करें गणेश जी की पूजा, जानिए शुभ मुहूर्त

हिंदू पंचांग के मुताबिक आज यानी की 22 अगस्त को हेरंब संकष्टी चतुर्थी का व्रत किया जा रहा है। जीवन के विघ्न से मुक्ति पाने के लिए यह व्रत किया जाता है। तो आइए जानते हैं हेरंब चतुर्थी का शुभ मुहूर्त और पूजन विधि के बारे में।

हिंदू धर्म में भगवान शिव के पुत्र गणेश को प्रथम पूज्य देवता माना जाता है। भगवान गणेश की पूजा-अर्चना करने के लिए चतुर्थी तिथि शुभ मानी जाती है। हर महीने के कृष्ण और शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को व्रत किया जाता है। हिंदू पंचांग के मुताबिक आज यानी की 22 अगस्त को हेरंब संकष्टी चतुर्थी का व्रत किया जा रहा है। जीवन के विघ्न से मुक्ति पाने के लिए यह व्रत किया जाता है। तो आइए जानते हैं हेरंब चतुर्थी का शुभ मुहूर्त और पूजन विधि के बारे में...

शुभ मुहूर्त

बता दें कि भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि की शुरूआत 22 अगस्त 2024 को दोपहर 01:46 मिनट पर हो रही है। वह अगले दिन यानी की 23 अगस्त को सुबह 10:38 मिनट पर इस तिथि की समाप्ति हो रही है। ऐसे में उदयातिथि के मुताबिक 22 अगस्त दिन गुरुवार को हेरंब संकष्टी चतुर्थी का व्रत किया जाएगा।

पूजन विधि

हेरंब संकष्टी चतुर्थी के दिन सुबह स्नान आदि कर सूर्यदेव को जल अर्पित करें।

इस दिन हरे रंग के वस्त्र पहनना शुभ माना जाता है।

मंदिर की सफाई कर एक चौकी पर भगवान गणेश की प्रतिमा को स्थापित करें।

इसके बाद फल-फूल और धूप समेत आदि चीजें अर्पित करें।

फिर घी का दीपक जलाकर भगवान श्रीगणेश की आरती करें और उनके मंत्रों का जाप करें।

अब श्रीगणेश से सुख-समृद्धि की कामना करें और मोदक, फल और मिठाई आदि का भोग लगाएं।

आखिरी में आरती कर लोगों में प्रसाद बाटें।

मंत्र

गणपतिर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः।
द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः॥
विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्॥
विश्वं तस्य भवेद्वश्यं न च विघ्नं भवेत्क्वचित्।

क्यों ओवरथिंकिं करते हैं लोग, कैसे ये मानसिक स्वास्थ्य और रिश्तों को नुकसान पहुंचाती है, इसे कम करने के तरीके

बहुत ज्यादा सोचने वाले लोग अक्सर गलतफहमियो के शिकार होते हैं क्योंकि उनकी सोच ऐसी समस्याएं पैदा कर देती है, जो वास्तव में मौजूद होती ही नहीं है। ऐसे लोग अक्सर दूसरों इरादों को भी गलत समझ लेते हैं, जिससे रिश्तों में तनाव आ जाता है। ये तनाव लड़ाई-झगड़ों का कारण भी बन सकता है।

बहुत ज़्यादा सोचना न तो आपके मानसिक स्वास्थ्य और न ही आपके रिश्तों के लिए अच्छा है। अपने दिमाग में लगातार एक परिस्थिति को बार-बार दोहराना, निर्णयों पर बार-बार विचार करना या परिणामों के बारे में जरुरत से ज्यादा सोचना तनाव, चिंता और यहां तक कि डिप्रेशन का कारण बन सकता है। यह मानसिक तनाव न केवल आपकी भलाई को प्रभावित करता है, बल्कि दूसरों के साथ आपकी बातचीत और रिश्तों को भी प्रभावित करता है।

बहुत ज्यादा सोचने वाले लोग अक्सर गलतफहमियो के शिकार होते हैं क्योंकि उनकी सोच ऐसी समस्याएं पैदा कर देती है, जो वास्तव में मौजूद होती ही नहीं है। ऐसे लोग अक्सर दूसरों इरादों को भी गलत समझ लेते हैं, जिससे रिश्तों में तनाव आ जाता है। ये तनाव लड़ाई-झगड़ों का कारण भी बन सकता है। ऐसे में यह पहचानना महत्वपूर्ण होता जाता है कि आप बहुत ज्यादा क्यों सोचते हैं? इसी के साथ बहुत ज्यादा सोचने के इस चक्र को तोड़ने के लिए उठाएं जाने वाले जरुरी कदमों पर भी विचार करना आवश्यक है।

मानसिक स्वास्थ्य की विशेषज्ञ मैगी लांसियोनी ने इस मुद्दे पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने ज्यादा सोचने की वजहों के बारे में बताया और इसी के साथ उन्होंने इसे कम करने के कुछ तरीके भी बताए।

मैगी ने कुछ कारण बताए, जिनकी वजह से लोग बहुत ज्यादा सोचने से जूझते हैं

मैगी ने कहा कि जो लोग बचपन से सुरक्षित माहौल में नहीं पले-बढ़े हैं या फिर उन्हें बड़े होने पर हर चीज को खुद से समझना पड़ा है वो अक्सर खुद को ज्यादा सोच-विचार करता हुआ पाते हैं। इसके अलावा जिन लोगों को गलती करने का डर रहता है या फिर जो लोग निर्णय लेने में संघर्ष करते हैं वो बहुत सोचते हैं।

एक्सपर्ट ने कहा कि आपको यह महसूस कराया गया है कि आप काफ़ी अच्छे नहीं हैं और लगातार इस बात की चिंता करते हैं कि आप दूसरों के लिए काफ़ी नहीं हैं। आपके जीवन में तनाव और चिंता का स्तर बढ़ गया है और आप आत्मविश्वास और आत्म-संदेह से जूझ रहे हैं, जिससे खुद पर भरोसा कम हो रहा है तो आप ज्यादा सोच विचार करने लगते हैं।

मैगी ने ज्यादा सोचने को कम करने के कुछ उपाय बताते हुए कहा कि ध्यान भटकाना बहुत मददगार हो सकता है। ऐसी चीज़ें खोजें जो आपकी ऊर्जा को खत्म कर दें (ज़्यादा सकारात्मक तरीके से) या आपका ध्यान भटका दें। इसके अलावा उन्होंने लोगों को ध्यान और साँस लेने के व्यायाम करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि ध्यान/साँस लेना आपके मस्तिष्क की रसायन विज्ञान को बदल सकता है, जब इसे सही तरीके से किया जाए।

मैगी ने आग कहा कि अपने नकारात्मक विचारों को पहचानें और उन्हें चुनौती दें। क्या आपके विचारों के लिए कोई सबूत है? क्या संभावना है कि यह सच हो जाए? हम विचार को कैसे फिर से परिभाषित कर सकते हैं? उदाहरण के लिए, मैं बहुत असफल हूँ बदलकर किसके मानक से मैं असफल हो रहा हूँ? क्या किसी ने मुझे वास्तव में असफल कहा है? क्या ऐसे समय का कोई सबूत है जब मैं असफल नहीं हुआ हूँ? और एक मुकाबला करने का तरीका यह हो सकता है कि यह मेरे लिए वाकई मुश्किल है, लेकिन मैं अपना सर्वश्रेष्ठ करने की कोशिश कर रहा हूँ। और यह काफी है।

मैगी ने लोगों को जर्नलिंग/अपने विचारों को लिखने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि यह आपके दिमाग से बेचैनी भरी भावनाओं और विचारों को निकालकर कागज़ पर उतारने में मदद करता है। उन्होंने आगे कहा, 'एक ₹चिंता का समय₹ निर्धारित करें। सचमुच 5-10 मिनट के लिए एक टाइमर सेट करें और उस पूरे समय के लिए खुद को चिंता करने दें। और एक बार जब टाइमर बंद हो जाता है, तो आगे बढ़ जाएं।'

मैगी ने लोगों से कहा कि बड़ी तस्वीर को देखने की कोशिश करें। क्या यह चिंता एक हफ़्ते में मायने रखेगी? एक महीने में? एक साल में? कृतज्ञता का अभ्यास करें। एक और कौशल जो सचमुच आपके मस्तिष्क के रसायन विज्ञान को बदल सकता है। थेरेपी पर जाएँ! अपने अति-विचार की उत्पत्ति और सामना करने में आपकी मदद करने के लिए अधिक विशिष्ट और व्यक्तिगत तरीकों को जानने के लिए!

सम्मान पाकर कार्य क्षमता में होती है बढ़ोत्तरी : स्पेशल पुलिस कमिश्नर अजय चौधरी

सुषमा रानी

नई दिल्ली। पिछले 24 वर्षों से मीडिया के फ़ील्ड में सक्रिय भूमिका निभाने वाले फ़ेस ग्रुप के चेयरमेन डॉ० मुश्ताक़ अंसारी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल ने स्पेशल कमिश्नर ऑफ़ पुलिस (ट्रेफ़िक) अजय चौधरी आई पी एस से मुलाक़ात की और उन्हें फ़ेस ग्रुप द्वारा 2 अक्टूबर को आयोजित होने वाले महात्मा गाँधी एक्सिलेंस अवॉर्ड 2024 का निमंत्रण भी दिया। इस अवसर पर डॉ० मुश्ताक़ अंसारी ने आई पी एस चौधरी को जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रीय स्तर के इस सम्मान समारोह में देश के क़रीब 20 राज्यों के चुनिंदा समाज सेवी और देश भक्तों को अवॉर्ड से सम्मानित किया जाएगा। अजय चौधरी ने फ़ेस ग्रुप के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि राष्ट्र हितेषी कार्य करने वाले लोगों का सम्मान करने से उनका मनोबल बढ़ता है जिससे समाज सुधार की संभावनाएँ भी बढ़ती हैं। उन्होंने कहा सम्मान पाकर कार्य क्षमता में भी बढ़ोत्तरी होती है।

प्रतिनिधि मंडल में ताहिर सिद्दीक़ी, विनोद शर्मा, पवन सोबती, जावेद सिद्दीक़ी व मीनू ठाकुर भी शामिल रहे।

"केजरीवाल आएंगे" नारे को आम आदमी पार्टी ने किया लांच

सुषमा रानी

नई दिल्ली। 22 अगस्त आम आदमी पार्टी आगामी विधानसभा चुनाव सीएम अरविंद केजरीवाल को केंद्र में रखकर लड़ेंगी। इसके लिए आम आदमी पार्टी ने #केजरीवाल आएंगे# कैंपेन को लांच कर दिया है। दिल्ली भर में #केजरीवाल आएंगे# की कई होर्डिंग भी लगा दी गई है। इस कैंपेन के सहारे आम आदमी पार्टी दो संदेश देने में कामयाब हुई है।

पहला, आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव में भी केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी सरकार बनाएगी और दूसरा, केंद्र की भाजपा सरकार की तरफ से सीएम केजरीवाल को झूठे केस में जेल भेजने की साज़िश भी सफल नहीं हुई। इस साज़िश को हराकर मनीष सिसोदिया जेल से बाहर आ गए और अब केजरीवाल भी आएंगे।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव संगठन एवं सांसद डॉ. संदीप पाठक का कहना है कि अरविंद केजरीवाल को लेकर दिल्ली और देश की जनता में बहुत सेंटीमेंट है। दिल्ली की जनता अरविंद केजरीवाल के जेल से बाहर आने का बेसब्री से इंतजार कर रही है। जब से अरविंद केजरीवाल गए हैं, दिल्ली के बहुत सारे काम रुक गए हैं। जनता को भरोसा है कि उनके बाहर आने के बाद दिल्ली के रुके सारे काम तेजी से पूरे होंगे और कई लंबित समस्याओं का भी त्वरित समाधान हो सकेगा। सबको भरोसा है कि जैसे मनीष सिसोदिया जनता के आशीर्वाद और संविधान की ताकत की बदौलत जेल की दीवारों को तोड़कर बाहर आए, वैसे ही बहुत जल्द अरविंद केजरीवाल भी बाहर आएंगे।

उन्होंने कहा कि लोग यह बात समझ रहे हैं कि केंद्र की भाजपा सरकार ने केवल दिल्ली का काम रोकने के लिए एक झूठे केस में अरविंद केजरीवाल को जेल में डाला हुआ है, ताकि दिल्ली की जनता परेशान हो जाए। जब से अरविंद केजरीवाल गए हैं तब से भाजपा और उसके एलजी लगातार काम रोकने की कोशिश कर रहे हैं। एलजी के अधीन अधिकारी चाहकर भी जनता के काम सही से नहीं कर पा रहे हैं। इसका खामियाजा दिल्ली की भोली भाली जनता को भुगतना पड़ रहा है। हालांकि दिल्ली सरकार जनता के सारे काम कराने का पूरा प्रयास कर रही है, लेकिन जब अरविंद केजरीवाल बाहर आ जायेंगे तो ये सारे काम और तेजी से हो पाएंगे। अरविंद केजरीवाल ने इन लोगों से लड़- लड़ कर अब तक ढेरों काम करवाएं हैं और आगे भी करवाएंगे

उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी #केजरीवाल आएंगे# का नारा लांच कर संदेश देना चाहती है कि आगामी दिल्ली विधानसभा का चुनाव अरविंद केजरीवाल को केंद्र रखकर लड़ा जाएगा और उनके नेतृत्व में एक बार फिर दिल्ली की जनता प्रचंड बहुमत देकर आम आदमी पार्टी की सरकार बनाएगी। दिल्ली की जनता अरविंद केजरीवाल से प्यार करती है और उनकी कट्टर ईमानदारी पर दिल्लीवालों को पूरा यकीन है।

पश्चिमी ज़ोन सबसे प्रभावित ज़ोन ,हर तरफ़ कूड़े का ढेर और गंदगी-मेयर डॉ शैली

सुषमा रानी

नई दिल्ली। मेयर डॉ शैली ओबेरॉय एक्शन मोड में, आज फिर पश्चिमी ज़ोन में सफ़ाई व्यवस्था का जायज़ा लेने के लिए निरीक्षण किया।अधिकारियों व पार्षदों के साथ मोहन गार्डन वार्ड व बिंद्रापुर वार्ड में का दौरा किया। निरीक्षण के दौरान मेयर ने मोहन गार्डन वार्ड में पाया कि ढलाव घर के बाहर कूड़े का अंबार लगा हुआ है और दो -तीन किलोमीटर तक यह कूड़ा मुख्य सड़क पर फैल गया है, जिसके कारण यातायात में भी असुविधा हो रही। मेयर ने मौक़े पर ही कूड़ा प्रबंधन प्राइवेट एजेंसी को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि अगर पाँच दिन के भीतर यहाँ से कूड़ा नहीं उठा तो सख़्त कार्रवाई होगी। मेयर ने उपायुक्त को निर्देश दिए कि प्राइवेट एजेंसी को आज ही नोटिस जारी करें।

मेयर ने बिंद्रापुर वार्ड का भी दौरा किया और पाया की वहाँ भी ऐसी ही स्थिति है, ढलाव घरों के बाहर कूड़ा ही कूड़ा है, कोई साफ़ सफ़ाई नहीं है। साथ ही मलबा संग्रहण साइट पर मलबे के ढेर प्लास्टिक की शीट से ढक कर जमा किया हुआ है जबकि उसी साइट के किनारे नाले में कचरा भरा हुआ है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि ढलाव घरों से प्रतिदिन कूड़ा उठना चाहिए। क्षेत्र में अतिरिक्त कर्मचारी लगाए जाएं। सफ़ाई व्यवस्था को लेकर कोई कोताही नहीं होनी चाहिए।

मेयर डॉ शैली ओबेरॉय ने कहा की पश्चिमी ज़ोन सबसे प्रभावित ज़ोन है और हर तरफ़ कूड़े का ढेर और गंदगी है। इस जोन में सफ़ाई व्यवस्था को सुदृढ़ करने की अत्यंत आवश्यकता है। उपायुक्त को भी निर्देश दिए गए हैं कि प्राइवेट एजेंसी पर सख़्ती की जाए ताकि सफ़ाई के मामले में कोई लापरवाही न हो। निरीक्षण कार्यक्रम में उपायुक्त संदीप कुमार, क्षेत्रीय पार्षद सुरेंद्र कौशिक व पार्षद कृष्णा देवी राघव व निगम के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

मेयर ने कहा की दिल्ली में सफ़ाई व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि वे अधिकारियों के साथ सभी वार्ड में सफ़ाई व्यवस्था का जायज़ा लेने के लिए लगातार निरीक्षण करती रहेगी ताकि ज़मीनी स्तर पर सफ़ाई का कार्य हो। दिल्ली को साफ़, सुंदर व हरा भरा बनाना निगम में आप सरकार की पहली प्राथमिकता है।

रिपोर्ट में उजागर हुए महाघोटाले पर उचित, पारदर्शी जांच के लिए जेपीसी के गठन की मांग

सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव के नेतृत्व में देश में बढ़ती अराजकता, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और हिडनबर्ग की रिपोर्ट में सेबी चेयरपरसन और गौतम अडानी ग्रुप की मिली भगत से करोड़ों निवेशकों की राशि सुरक्षित करने के लिए केन्द्र सरकार से जेपीसी गठित करने की मांग को लेकर आज जंतर मंतर पर विशाल धरना आयोजित किया गया। धरने में हजारों की संख्या में मौजूद कांग्रेस कार्यकर्ता और नेताओं सहित सरकार की गलत नीतियों से प्रभावित मौजूद लोग सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ जेपीसी गठित करने के नारे लगा रहे थे। मंच का संचालन कम्युनिकेशन विभाग के चेयरमैन एवं पूर्व विधायक अनिल भारद्वाज ने किया।

प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि धरना करने की जरुरत इसलिए पड़ी कि पिछले कई वर्षों से राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे देश में अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई से लगातार चिंतित है क्योंकि मोदी सरकार की पूंजीपति पोषित नीति के कारण देश का वंचित, पिछड़ा, दलित, गरीब, मजदूर, किसान पिछड़ता जा रहा है। बेरोजगारी का चरम पर है, सरकार ने 2 करोड़ रोजगार देने वादा किया था परंतु 10 वर्षों में 56 लाख नौकरी खत्म कर दी और 10 लाख सरकारी पद खाली पड़े है। सरकार की सभी नीतियां उद्योगपतियों के बन रही है और चंद पूंजीपतियों के लिए 10 वर्षों से काम कर रही है। पिछले वर्षों में एयरपोर्ट, पोर्ट, रेलवे, सरकारी संस्थान सबका निजीकरण करके कुछ पूंजीपतियों विशेषकर अडानी उनका अधिग्रहण करने काम कर रहे है। सरकार मुनाफा कमाने वाली कम्पनियों का बजट कम करके उन्हें कमजोर करके बेचा जा रहा है जिसका मुख्य उदाहरण बीएसएनएल है।

उन्होने कहा कि हिडनबर्ग की रिपोर्ट में सेबी जो स्टॉक एक्सचेंज को देखती है, सेबी चीफ के साथ अडानी का संबध को रिपोर्ट में उजागर किया है। रिपोर्ट में साफ हुआ है कि अडानी व सेबी अध्यक्ष की सांठगांठ है और लाखों करोड़ों रुपये का महाघोटाला हुआ है, जिसमें सरकारी राजस्व को भी नुकसान हुआ है परंतु सरकार रिपोर्ट पर विपक्ष पर देश की प्रतिष्ठा को दाव पर लगाने की बात कह रही है। उन्होंने कहा कि कुछ ऐसे मुद्दे होते है जिन पर सरकार को संज्ञान लेना चाहिए लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने अडानी द्वारा किए गए हजारों करोड़ के महाघोटाले की जांच की जिम्मेदारी सेबी अध्यक्ष माधबी बुच सौंपी जो स्वयं अडानी के साथ मिली हुई है। निष्पक्ष जांच कैसे कर सकती है। अडानी महाघोटाले की जांच के लिए जेपीसी गठित करके जांच होनी चाहिए। इनकी आपसी सांठगांठ से देश को नुकसान हुआ है। सरकार जेपीसी से भाग रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी मांग करती है कि सेबी अध्यक्ष माधबी बुच अपने पद से इस्तीफा दे अथवा सरकार उन्हें तत्काल प्रभाव से बर्खास्त करे।

सचिन पायलट ने कहा कि खंडित लोकसभा में भाजपा की तोड़मरोड़ कर निर्माण की गई सरकार के मुखिया प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार नए बिल और कानून बना रहे है और लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे भी लगातार सरकार की जवाबदेही तय कर रहे है जिसका परिणाम सरकार के पास कोई जवाबदेही नही और सरकार को लेटरल एन्ट्री, ब्राडकास्ट बिल और वक्फबोर्ड बिल को वापस लेना पड़ा है। उन्होंने कहा कि राहुल जी देश को बचाने के लिए सरकार और चंद पूंजीपतियों के बीच मिली भगत जिसके चलते सरकारी कम्पनियों को पूंजीपतियों के दबाव में आकर सरकार कौढ़ी के दामों में बेच रही उसके खिलाफ राहुल जी सड़क से संसद लड़ाई लड़ रहे है। उन्होंने कहा कि हिडनबर्ग की रिपोर्ट अनुसार सेबी अध्यक्ष की मिलीभगत उन लोगों के साथ है जिनके खिलाफ वो जांच के आदेश सुप्रीम कोर्ट ने दिए है। सुप्रीम कोर्ट ने गंभीर आरोप लगाए कि लाखों करोड़ों रुपये के घोटाला हुआ, जिसकी जांच हो। परंतु जांच करने वाली सेबी चीफ खुद मानती है कि उनका अडानी ग्रुप के साथ लेन देन हुआ, उनकी कम्पनी में निवेश किया, वे कैसे निष्पक्ष जांच कर सकती है।

मुख्यमंत्री भगवंत मान तख्त श्री हजूर साहब में हुए नतमस्तक, सिरोपा देने पर विवाद

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान अपने परिवार सहित तख़्त श्री हजूर साहिब में नतमस्तक हुए। यह उनकी श्रद्धा है, जिस पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता। कोई भी व्यक्ति अपनी श्रद्धा और सम्मान अर्पित करने के लिए गुरुद्वारे में आ सकता है। लेकिन तख़्त साहिब से, उनके पतित होने के बावजूद, सिरोपा देना एक बड़ी गलती है। क्योंकि तख़्त साहिब से गुरु की मोहर उस व्यक्ति को कैसे दी जा सकती है, जिसने अपने केशों की बेअदबी की है और जो पतित है? तख़्त साहिब की अपनी मर्यादा है, जिसका पालन किया जाना चाहिए था। अगर तख़्त साहिब से पतित व्यक्तियों का सम्मान होगा, तो सिखी को नष्ट होने से हम कैसे रोक पाएंगे? तख़्त साहिब के सम्मानित जत्थेदार सिंह साहिब ज्ञानी कुलवंत सिंह जी बहुत ही सहृदय और समझदार व्यक्ति हैं, जिनका सिख पंथ में बहुत सम्मान है। मुझे हैरानी है कि उनके तख़्त साहिब के जत्थेदार होते हुए इस तरह के पतित व्यक्ति का सम्मान तख़्त साहिब से हुआ है। उन्हें भी इस बारे में जरूर सोचना चाहिए, क्योंकि मर्यादा का उल्लंघन करने के लिए हम कलगीधर पातशाह के प्रति जिम्मेदार होंगे। भगवंत मान न केवल पतित हैं, बल्कि वे खुद को सिख भी नहीं मानते। ऐसे सिखी से इंकार करने वाले व्यक्ति का तख़्त साहिब से सम्मानित होना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। क्या पंजाब का मुख्यमंत्री होना पतित होने के कृत्य को उचित ठहरा देता है? मेरा भगवंत मान से कोई व्यक्तिगत द्वेष नहीं है, लेकिन मेरा मानना है कि तख़्त साहिब की मर्यादा का ख्याल रखा जाना चाहिए था। मैं भगवंत मान को भी सलाह देता हूं कि कलगीधर पातशाह जी का यह महान तख़्त है, जहां से आपको भले ही गलती से सिरोपा मिल गया है, अब आपको इस उपहार का सम्मान करते हुए भविष्य में केश और दाढ़ी का अपमान करना छोड़ देना चाहिए और एक पूर्ण सरदार बनना चाहिए तथा नशे जैसी बुरी आदतों से दूर रहना चाहिए।इस संबंध में, मैंने इस पवित्र स्थल के मुख्य प्रशासक श्री विजय सतबीर सिंह से बात करके एक नम्र सिख के रूप में अपने दिल की बात साझा की, तो उन्होंने माफी मांगते हुए यह वादा किया है कि भविष्य में ऐसा नहीं होगा। मैंने उनसे तख़्त साहिब में क्षमा याचना करने की अपील की है, और उनकी आवाज़ से स्पष्ट हो रहा था कि अब उन्हें दिल से पछतावा है। वे आगे से तख़्त साहिब की मान-मर्यादा को बनाए रखेंगे। साथ ही मेरा उन सम्मानित सिख व्यक्तियों से भी सवाल है, जो उस समय साथ थे, कि जो कुछ हुआ, क्या वह सही था और हम गुरु को क्या मुंह दिखाएंगे? इन शब्दों का उद्घोष शिरोमणि अकाली दल की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष श्री परमजीत सिंह सरना ने जारी प्रेस बयान के माध्यम से किया।

दिल्ली के हेल्थ प्रोफेशनल ने निकाला न्याय मार्च

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

नेशनल पब्लिक हेल्थ एलाईंस दिल्ली, के बैनर तले गुरूवार को कोलकाता में डॉक्टर और उत्तराखंड में नर्सिंग अधिकारी के साथ रेप एंड मर्डर की बर्बरतापूर्ण वीभत्सना के विरोध में असली दोषियों की तुरंत गिरफ्तारी की मांग को लेकर न्याय मार्च निकाला गया। इस बावत नेशनल पब्लिक हेल्थ यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष ने बताया कि सुरक्षा को लेकर जीबी पंत अस्पताल से लेकर मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज स्थित शहीद स्थल तक न्याय मार्च निकाला गया। यूनियन के ,दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष विजय कुमार ने बताया कि हैल्थ प्रोफेशनल के सैकडों कर्मचारियों ने कलकत्ता में लेडी डॉक्टर से रेप एंड बर्बरतापूर्ण मर्डर, अत्याचार के खिलाफ दोषियों की तुरंत गिरफ्तारी, व नारी सम्मान व सभी हेल्थ प्रोफेशनल की सुरक्षा ,जन स्वास्थ्य सेवा के सुदृढीकरण, विस्तारीकरण, निजीकरण, आउटसोर्सिंग पर रोक लगाने की मांग को लेकर तमाम हेल्थ प्रोफेशनल शामिल हुए है। इनमें मुख्यतः नर्सिंग एसोसिएशन जीबी पंत अस्पताल, पैरामेडिकल टेक्निकल इंप्लाइज यूनियन, जीबी पंत हॉस्पीटल कर्मचारी यूनियन ,पैरामेडिकल टेक्निकल इंप्लाइज यूनियन लोक नायक जय प्रकाश नारायण अस्पताल, रेजिडेंट डॉक्टर एसोसिएशन, जीबी पंत, मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज वर्कर्स यूनियन, डेंटल मेडिकल कॉलेज कर्मचारी यूनियन, दिल्ली रेडियो ग्राफी यूनियन, एससी/एसटी ओबीसी कर्मचारी यूनियन, दिल्ली ओटी टेक्निशियन एसोसिएशन ने शिरकत की। अध्यक्ष के मुताबिक तमाम यूनियनों के कर्माचारियों ने शहीद स्थल पर संवेदना व्यक्त करते हुए 2 मिनट का मौन रख कर श्रध्दांजलि दी गई। विजय कुमार के मुताबिक एक प्रस्ताव भी पारित किया गया। इसमें कहा गया कि उत्तराखंड की नर्सिंग अधिकारी, और कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में डॉक्टर के साथ हुए जघन्य अपराध और हत्या, दिल को अंदर तक झकझोरने वाली जघन्य घटना है।इस घटना से न केवल स्वास्थ्य कर्मी, डॉक्टर, नर्सिंग व पैरामेडिकल से जुडे लोग बेहद दुखी है और उत्तेजित है। इस वीभत्स घटना पर हर विवेकशील इंसान मन से परेशान एवं दुखी है। अब तक की जांच और कारवाई से हम संतुष्ट नहीं है। जांच हाईकोर्ट के न्यायाधीश की देखरेख में कई जानी चाहिए। अध्यक्ष विजय कुमार ने सरकार से तुरंत उचित कदम उठाने की अपील की। डॉक्टर सुखदेव रेजिडेंट डॉक्टर एसोसिएशन के अध्यक्ष ने कहा कि हम सरकार से शांतिपूर्ण तरीके से अपने कार्यस्थल वापिस आकर मरीजों की सेवा करते हुए सुरक्षित महसूस करना चाहते है।

कंपनी ने माफ़ी मांगी, दुकानों और वेबसाइट से टोपी हटाई गई

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। सिख-विरोधी ताकते सिख पंथ के साथ अपनी कुटिल चालो के साथ कोम को दुबिधा मे डाले रखते हैं. इसी तरह नाइका फैशन ने टोपी पर एकओंकार का लोगो लिखकर सिखों के दिल को ठेस पहुंचाई है. मामले का पता चलने पर शिरोमणि अकाली दल दिल्ली इकाई की महिला विंग की प्रधान बीबी रणजीत कौर ने तुरंत इसे अपना कोमी कर्तव्य समझा और कंपनी को इस टोपी की बिक्री रोकने और तुरंत वापस लेने के लिए कानूनी नोटिस भेजा. जो माल बाजार में बिक गया है उसे वापस करने के लिए भी कहा गया है. उनके द्वारा भेजे गए नोटिस मिलने पर कंपनी ने पंथ से माफी मांगी है और इस तरह की गलती दोबारा न करने को कहा है और उन्होंने अपनी वेबसाइट और दुकानों से यह माल हटा दिया है. बता दें कि बीबी रणजीत कौर द्वारा एक लीगल सेल का गठन किया गया है जो सिख परिवारों के बीच के मामलों और पंथ को परेशान करने वाले मामलों को देखती है और इसके तहत उन्होंने इस मामले को प्राथमिकता के आधार पर लेते हुए कानूनी सेल के मुखी एडवोकेट बीबी रविंदर कौर बत्रा द्वारा कार्रवाई की है।

कुलपति कार्यालय के समक्ष डूटा का धरना

सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के सैकड़ों शिक्षकों ने शिक्षा मंत्री आतिशी द्वारा दिल्ली सरकार द्वारा पूर्णतः वित्तपोषित दिल्ली विश्वविद्यालय के बारह कॉलेजों पर लगाए गए वित्तीय अनियमितताओं के गलत और निराधार आरोपों के विरोध में कुलपति कार्यालय के समक्ष दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (डूटा) ने धरना दिया। डूटा का कहना है कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि दिल्ली सरकार अब इन कॉलेजों को पूर्णतः वित्तपोषित करने की अपनी जिम्मेदारी से भाग रही है। इससे पहले आतिशी द्वारा दो पत्र लिखे गए थे, जिसमें उन्होंने दावा किया था कि दिल्ली सरकार द्वारा वित्तपोषित 12 कॉलेजों में 939 शिक्षकों के पद अवैध रूप से सृजित किए गए हैं और इन 12 कॉलेजों में दशकों से स्थायी/तदर्थ आधार पर काम कर रहे शिक्षकों के वेतन पर करोड़ों रुपये सरकारी धन खर्च किया गया है।

डूटा अध्यक्ष प्रो. ए. के. भागी ने शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि आतिशी द्वारा इन पत्रों के साथ-साथ फंड में कटौती और इन कॉलेजों को वित्तीय रूप से बीमार घोषित करना, कॉलेज के कर्मचारियों और छात्रों के प्रति दिल्ली सरकार की दबाव बनाने की चाल के अलावा और कुछ नहीं है। उन्होंने बताया कि दिल्ली सरकार का मुख्य उद्देश्य इन कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को डॉ. भीम राव अंबेडकर विश्वविद्यालय और कौशल विश्वविद्यालय जैसे राज्य विश्वविद्यालयों में स्थानांतरित करने के लिए सहमत करना है। सरकार इन कॉलेजों को डिग्री प्रदान करने वाले स्वायत्त कॉलेजों के रूप में चाहती है। इसका मतलब है कि इन सार्वजनिक वित्त पोषित संस्थानों को स्व-वित्त पोषित संस्थानों में परिवर्तित करना है। प्रोफेसर भागी ने कहा कि सरकार के इन 12 कॉलेजों के मुद्दे पर प्रोफेसर प्रकाश सिंह कमेटी की रिपोर्ट का स्वागत करता है। रिपोर्ट दिल्ली सरकार द्वारा वित्त पोषित कॉलेजों से संबंधित मुद्दों पर डूटा के रुख की पुष्टि करती है। प्रोफेसर भागी ने शिक्षकों को बताया कि रिपोर्ट में की गई टिप्पणियों में कहा गया है कि इन 12 कॉलेजों में कोई वित्तीय अनियमितता नहीं पाई गई है और इन कॉलेजों को डीयू से संबद्ध करने की कोई संभावना नहीं है। अनियमित फंडिंग/फंड कटौती के कारण वेतन और पेंशन के भुगतान में देरी हुई है। इसके अलावा, सेवानिवृत्त और मृतक कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति लाभ, चिकित्सा बिल प्रतिपूर्ति, बच्चों की शिक्षा भत्ता, सातवें वेतन संशोधन और पदोन्नति के कारण बकाया, एलटीसी आदि कर्मचारियों के अन्य वैधानिक बकाया या तो अवैतनिक हैं या एक से तीन साल की देरी से भुगतान किए जाते हैं।

महरौली रोड आईटीआई दिन में शिक्षा का मंदिर, रात में जुए का अड्डा

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम के महरौली रोड स्थित जिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) में सुरक्षा के इंतजाम बेहद खराब हैं। तीन साल से अधिक समय से संस्थान की चारदीवारी नहीं बन पाई है जिससे छात्र-छात्राएं असुरक्षित महसूस करते हैं। दिन में शिक्षा का मंदिर रात में जुए का अड्डा बन रहा है। टूटी दीवार से असामाजिक तत्व घुसकर जुआ खेलते हैं और सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाते हैं।

गुरुग्राम। गुरुग्राम के सबसे बड़े महरौली रोड स्थित जिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) में सुरक्षा के इंतजाम बेहतर नहीं हैं।

यहां पर लगभग तीन साल से अब तक चारदीवारी तक नहीं बन पाई है। ऐसे में विद्यार्थी खासकर छात्राएं बिना चारदीवारी के संस्थान में अपने आपको सुरक्षित महसूस नहीं करती हैं। संस्थान का यह भवन दिन में शिक्षा का मंदिर और रात में जुए का अड्डा बन रहा है।

लगभग तीन वर्ष पहले संस्थान की बाहरी दीवार जर्जर घोषित की गई और उसे तोड़ दिया गया। लेकिन अब तक यहां पर टूटी दीवार का मलबा तक नहीं हटाया गया है।

अधूरी पड़ी दीवार आज तक पूरी नहीं बन पाई है। ऐसे में असामाजिक तत्व यहां अंदर प्रवेश कर जाते हैं और रात के समय संस्थान में जुआ आदि खेलते हैं।

नहीं बनी दीवार, सरकारी संपत्ति को हो रहा नुकसान

संस्थान की नई दीवार बनाने का कार्य काफी पहले शुरू हुआ था, लेकिन कर्मचारी बीच में ही वापस लौट गए थे। इसके बाद टेंडर प्रक्रिया दोबारा होना तो दूर की बात टूटी दीवार का मलबा तक नहीं हटाया गया है।

वर्तमान में संस्थान में 1500 से अधिक विद्यार्थी पढ़ाई कर रहे हैं। विद्यार्थियों की सुरक्षा को देखते हुए जरूरी है कि यह दीवार जल्द बनाई जानी चाहिए। कई बार यहां पर छात्राओं के साथ छेड़छाड़ जैसी घटनाएं भी हुई हैं।

मारपीट और चोरी के भी कई मामले सामने आए हैं। टूटी दीवार को बनाने का कार्य लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) का है। विभाग को आईटीआई प्रिंसिपल की तरफ से 50 से अधिक बार लिखित में पत्र भेजकर आग्रह किया गया है कि जल्द से जल्द दीवार को बनवाया जाए।

इसके अलावा जिला उपायुक्त और अतिरिक्त उपायुक्त को भी टूटी दीवार को लेकर सुरक्षा के इंतजामों में बरती जा रही लापरवाही के बारे में बताया गया था।

मौके पर ही डीसी और एडीसी ने संबंधित एक्सईएन को फोन कर जल्द से जल्द नई दीवार बनाने का कार्य करने के निर्देश दिए गए थे। इसके बाद भी आज तक कोई सुध नहीं ली गई है। यहां पर रात के समय असामाजिक तत्व भवन के अंदर आ जाते हैं और सरकारी संपत्ति को नुकसान भी पहुंचाते हैं।

तीन साल से जर्जर भवन को तोड़ने का इंतजार

पीडब्ल्यूडी विभाग द्वारा संस्थान की एक बिल्डिंग तीन साल पहले जर्जर घोषित कर दी गई थी। इसके बाद भी भवन को अब तक तोड़ा नहीं गया है। जबकि कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण परिषद द्वारा इस भवन को तोड़ने के लिए पीडब्ल्यूडी के पास पांच लाख रुपये जमा भी हो चुके हैं।

यह भवन लगभग 65 साल पुराना है। वर्षा के दिनों में इस भवन के गिरने का डर सताता रहता है। भवन के अंदर टूटी छतों से वर्षा का पानी जमा हो जाता है।

पिछले वर्ष यहां पर डेंगू का लार्वा भी मिला था। लगातार भवन में पानी भरा रहने से यह कभी भी गिर सकता है। इस भवन को तोड़कर यहां पर 500 विद्यार्थियों की क्षमता वाला मल्टीपरपज हाल और नए क्लासरूम तथा वर्कशाप बनाई जानी है।

"अब तक पीडब्ल्यूडी को 50 से अधिक रिमांइडर भेज दिए गए हैं। वर्षा के दिनों में जर्जर भवन को लेकर हमेशा डर बना रहता है। क्योंकि शाम के समय यहां पर टूटी दीवार से बाहरी लोग भी अंदर आ जाते हैं और यहां बैठकर नशा करते हैं। संस्थान के बाहर खड़े होने वाले आटो चालक भी अपना आटो संस्थान के अंदर ले आते हैं।- जयदीप कादियान, प्रिंसिपल, जिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान"

नोएडा में 3.5 करोड़ की जमीन पर गरजा बुलडोजर, अथॉरिटी ने कई दुकानों को किया ध्वस्त

नोएडा में अवैध निर्माण के खिलाफ प्राधिकरण की कार्रवाई लगातार जारी है। अब तक करीब छह लाख वर्गमीटर जमीन को अवैध कब्जा मुक्त कराया जा चुका है। ताजा मामले में नोएडा अथॉरिटी की टीम ने पांच प्रतिशत विकसित भूखंड पर बनी अवैध दुकानों को ध्वस्त कर दिया है। इस जमीन की कीमत करीब 3.5 करोड़ रुपये बताई जा रही है।

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा। सेक्टर-42 स्थित पांच प्रतिशत विकसित भूखंड पर कब्जा कर भूमाफिया अवैध रूप से दुकानों को निर्माण करा रहे थे। इसका वाणिज्यिक उपयोग जल्द होने वाला था।

जानकारी पर बृहस्पतिवार वर्क सर्किल-3 वरिष्ठ प्रबंधक राजकमल के नेतृत्व में प्राधिकरण पुलिस साथ तोड़फोड़ टीम पहुंची, उन्होंने अवैध निर्माण ध्वस्त कर एक हजार वर्ग मीटर जमीन को अपने कब्जे में लिया।

जमीन की कीमत करीब 3.5 करोड़ रुपये आंकी गई है। कार्रवाई के दौरान स्थानीय लोगों की ओर से इसका विरोध किया गया, लेकिन मौके पर मौजूद पुलिस बल व अधिकारियों ने आक्रोशित लोगों को शांत कराया और समझाकर वापस भेज दिया।

बता दें कि अब तक करीब छह लाख वर्गमीटर जमीन को अवैध कब्जा मुक्त कराया जा चुका है, जिसकी कीमत करीब दो हजार करोड़ रुपये के आसपास है। प्राधिकरण सीईओ डॉ. लोकेश एम ने स्पष्ट कहा कि अवैध निर्माण को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

ऐसे में जो लोग भी निवेश कर रहे है वह पहले प्राधिकरण से भूमि संबंधित पूरी जानकारी प्राप्त कर ले। वर्क सर्किल तीन वरिष्ठ प्रबंधक राज कमल ने बताया कि प्राधिकरण का अवैध निर्माण हटाने का अभियान जारी है।

इसी क्रम में यह कार्रवाई हुई है। आवासीय मद की यह जमीन थी, जिस पर कब्जा कर कुछ लोगों की ओर से अवैध तरीके से दुकानों को बनाकर व्यवसायिक इस्तेमाल करने का प्रयास किया जा रहा था।

यह प्राधिकरण की अधिग्रहित व कब्जा प्राप्त जमीन है। बार बार नोटिस देने के बाद भी अवैध निर्माण को ध्वस्त नहीं किया गया। ऐसे में प्राधिकरण ने सुबह अभियान चलाकर यहां अवैध निर्माण को ध्वस्त किया। इस दौरान प्राधिकरण के 50 कर्मचारियों के साथ दो जेसीबी रही। वहीं स्थानीय पुलिस मौजूद रही।

लव जिहाद का आरोपी गिरफ्तार, हिंदू धर्म अपनाने का किया था ढोंग; रुला देगी महिला डॉक्टर की आपबीती

गाजियाबाद पुलिस ने लव जिहाद के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। आरोपित ने हिंदू धर्म अपनाने का ढोंग कर एक महिला चिकित्सक से शादी की थी। शादी के बाद उसने अपने बेटे का नाम अली रखा और उसका खतना भी कराया। महिला चिकित्सक की मां की शिकायत पर आरोपित के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था।

गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जनपद में कोतवाली पुलिस (Ghaziabad Police) ने लव जिहाद (Love Jihad) के लिए महिला चिकित्सक से शादी करने वाले आरोपित को गिरफ्तार किया है।

आरोपित ने हिंदू धर्म अपनाने का किया था ढोंग

आरोपित ने वर्ष 2018 में हिंदू धर्म अपनाने का ढोंग कर युवती से शादी की थी। शादी के बाद दोनों के जब बेटा हुआ तो आरोपित ने उसका नाम अली रखा और बेटे की सुन्नत भी कराई।

चिकित्सक की मां की शिकायत पर दर्ज हुआ था मुकदमा

महिला चिकित्सक की मां की शिकायत पर 13 अगस्त को कोतवाली में आरोपित पर मुकदमा दर्ज किया गया था। पुलिस पूछताछ में सामने आया है कि आरोपित मेरठ के कठौर निवासी अब्दुर्रहमान ने उनकी बेटी को बंधक बनाया था।

भारतीय बच्चों में बढ़ रही हिंसक प्रवृत्ति चिन्ताजनक

ललित गर्ग

स्कूली बच्चों में पिछले कुछ समय से हिंसक प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है, जो समाज के लिए खतरे की घंटी से कम नहीं है। मनोविज्ञानी यह मानते हैं कि मोबाइल पर पबजी जैसे खतरनाक गेम और वेब सीरीज बच्चों को हिंसक बना रही है।

भारतीय बच्चों में बढ़ रही हिंसक प्रवृत्ति चिन्ताजनक है। पिछले कुछ समय से स्कूली बच्चों में बढ़ती हिंसा की प्रवृत्ति निश्चित रूप से डरावनी एवं खौफनाक है। चिंता का बड़ा कारण इसलिए भी है क्योंकि जिस उम्र में बच्चों के मानसिक और सामाजिक विकास की नींव रखी जाती है, उसी उम्र में कई बच्चों में आक्रामकता घर करने लगी है और उनका व्यवहार हिंसक होता जा रहा है। जिस उम्र में बच्चों को पढ़ाई-लिखाई और खेलकूद में व्यस्त रहना चाहिए, उसमें उनमें बढ़ती आक्रामकता, हिंसा एवं क्रूरता एक अस्वाभाविक और परेशान करने वाली बात है। कई घटनाओं में स्कूल में पढ़ने वाले किसी बच्चे ने अपने सहपाठी पर चाकू या किसी घातक हथियार से हमला कर दिया और उसकी जान ले ली। अमेरिका की तर्ज पर भारत के बच्चों में हिंसक मानसिकता का पनपना हमारी शिक्षा, पारिवारिक एवं सामाजिक संरचना पर कई सवाल खड़े करती है। यह दुष्प्रवृत्ति बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर तो नकारात्मक प्रभाव डाल ही रही है, इसे भविष्य में समाज की शांति के लिए बड़ा खतरा भी मानना चाहिए। राजस्थान के उदयपुर के स्कूल में दो छात्रों के आपसी विवाद में चाकू मारने से एक छात्र की मौत भी बच्चों में पनप रहे इसी हिंसक बर्ताव का घिनौना एवं घातक रूप है।

बड़ा सवाल है कि जिन वजहों से बच्चों के भीतर आक्रामकता एवं हिंसा पैदा हो रही है, उससे निपटने के लिए क्या किया जा रहा है! पाठ्यक्रमों का स्वरूप, पढ़ाई-लिखाई के तौर-तरीके, बच्चों के साथ घर से लेकर स्कूलों में हो रहा व्यवहार, उनकी रोजमर्रा की गतिविधियों का दायरा, संगति, सोशल मीडिया या टीवी से लेकर उसकी सोच-समझ को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों से तैयार होने वाली उनकी मनःस्थितियों के बारे में सरकार, समाजकर्मी एवं अभिभावक क्या समाधान खोज रहे हैं। बच्चों के व्यवहार और उनके भीतर घर करती प्रवृत्तियों पर मनोवैज्ञानिक पहलू से विचार किए बिना समस्या को कैसे दूर किया जा सकेगा? बच्चों के बस्ते की औचक जांच की व्यवस्था की अपनी अहमियत हो सकती है। मगर जरूरत इस बात की है कि बच्चों के भीतर बढ़ती हिंसा और आक्रामकता के कारणों को दूर करने को लेकर गंभीर काम किया जाए। उदयपुर की घटना के पूरे मामले की पुलिस अपने तरीके से जांच करेगी, लेकिन किशोर अवस्था में ऐसी घटना को अंजाम देने के पीछे बच्चे की मानसिकता का पता लगाना भी ज्यादा जरूरी है। तहकीकात स्कूल की व्यवस्थाओं की भी होनी चाहिए कि आखिर बच्चा स्कूल में हथियार लेकर कैसे आ गया? इसमें दो राय नहीं कि किशोरवय में राह भटकने का खतरा ज्यादा रहता है। उम्र के इस पड़ाव पर उनको सही राह दिखाने की जिम्मेदारी परिजन और शिक्षक की ही होती है। आज दोनों ही कहीं न कहीं अपनी जिम्मेदारी से दूर होते नजर आ रहे हैं। स्कूल में केवल किताबी ज्ञान पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है। वहीं अर्थप्रधान दुनिया में माता-पिता के पास बच्चों के साथ बिताने के लिए समय ही नहीं बच पा रहा।

'मन जो चाहे वही करो' की मानसिकता वहां पनपती है जहां इंसानी रिश्तों के मूल्य समाप्त हो चुके होते हैं, जहां व्यक्तिवादी व्यवस्था में बच्चे बड़े होते-होते स्वछन्द हो जाते हैं। 'मूड ठीक नहीं' की स्थिति में घटना सिर्फ घटना होती है, वह न सुख देती है और न दुःख। ऐसी स्थिति में बच्चे अपनी अनंत शक्तियों को बौना बना देता है। यह दकियानूसी ढंग है भीतर की अस्तव्यस्तता को प्रकट करने का। पारिवारिक एवं सामाजिक उदासीनता एवं संवादहीनता से ऐसे बच्चों के पास सही जीने का शिष्ट एवं अहिंसक सलीका नहीं होता। वक्त की पहचान नहीं होती। ऐसे बच्चों में मान-मर्यादा, शिष्टाचार, संबंधों की आत्मीयता, शांतिपूर्ण सहजीवन आदि का कोई खास ख्याल नहीं रहता। भौतिक सुख-सुविधाएं ही जीवन का अंतिम लक्ष्य बन जाता है। भारतीय बच्चों में इस तरह का एकाकीपन उनमें गहरी हताशा, तीव्र आक्रोश और विषैले प्रतिशोध का भाव भर रहा है। वे मानसिक तौर पर बीमार बन रहे हैं और अपने पास उपलब्ध खतरनाक एवं घातक हथियारों का इस्तेमाल कर हत्याकांड कर बैठते हैं। शिक्षकों और परिजनों से संवादहीनता के चलते बच्चों ने मोबाइल फोन और सोशल मीडिया को संवाद का जरिया बना लिया है। कई बार टी.वी. पर हिंसक कार्यक्रम देखने आदि से बच्चों में हिंसक व्यवहार बढ़ जाता है। घर में लगातार बंदूकें, चाकू आदि देखते रहने से भी बच्चों का व्यवहार हिंसक हो जाता है। वैसे भी अगर बच्चों को किसी भी बात के लिए मना नहीं करेंगे, टोकेंगे नहीं तो उन्हें अच्छे-बुरे की पहचान कैसे होगी। एक ऑनलाइन सर्वे में माता-पिता ने कहा था कि बच्चों को गलत काम की सजा भी मिलनी चाहिए, वरना उनके मन में किसी भी बात के लिए डर नहीं रहेगा और हो सकता है वे ऐसे अपराधों को भी अंजाम देने लगें, जिनके परिणामों के बारे में उन्हें पता नहीं।

स्कूली बच्चों में पिछले कुछ समय से हिंसक प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है, जो समाज के लिए खतरे की घंटी से कम नहीं है। मनोविज्ञानी यह मानते हैं कि मोबाइल पर पबजी जैसे खतरनाक गेम और वेब सीरीज बच्चों को हिंसक बना रही है। लेकिन, इसके पीछे न सिर्फ स्कूल का वातावरण, बल्कि लाड-प्यार में अंधे अभिभावकों का रवैया भी कम जिम्मेदार नहीं है। बच्चों में हिंसक व्यवहार के संकेत, जैसे गलत भाषा का प्रयोग करना, समझाने पर भी गुस्सा करना, कोई भी बात समझाने पर चीजें फैंकने लगना, मां-बाप को ही मारने दौडना, लोगों के बारे में गलत बोलना, गलत आदतों में पडना, भाई-बहन के लिए स्नेह न रखना, लड़ाकू प्रवृत्ति का होना, हमेशा उदास रहना, संवेदनहीन और चिड़चिड़े रहना, बार-बार जोश में आना आपको नजर आ सकते हैं। एकल परिवारों में माता-पिता इतने व्यस्त होते हैं कि उनके पास बच्चों से बात करने का ज्यादा समय नहीं होता। वे अक्सर इस बात पर भी नजर नहीं रख पाते कि बच्चे क्या कर रहे हैं, क्या खेल रहे हैं, उनके दोस्त कौन-कौन से हैं। दोस्त उन्हें चिढ़ाते भी हैं कि अरे! तुम्हारे माता-पिता कैसे हैं, जो तुम्हें ऑनलाइन खेल भी नहीं खेलने देते। इससे बच्चों में हीनता और अपने घर वालों के प्रति नफरत का भाव पैदा होता है, जो अपराध के रूप में बाहर निकलता है। फिजिकल, ओरल या सैक्सुअल रूप में गलत व्यवहार, घरेलू वातावरण न मिलना, माता-पिता द्वारा बच्चों की अनदेखी, दर्दनाक घटना होने या फिर स्ट्रैस होना, बच्चों को धमकाना, फैमिली प्रॉब्लम, नशीली चीजों का सेवन, शराब और अन्य गलत चीजों के सेवन से बच्चों में आक्रामकता बढ़ सकती है और वे हिंसक हो सकते हैं।

ऑस्ट्रिया के क्लागेनफर्ट विश्वविद्यालय की ओर से किशोरों पर किए गए अध्ययन में पता चला है कि दुनिया भर में 35.8 प्रतिशत से ज्यादा किशोर मानसिक तनाव, अनिद्रा, अकारण भय, पारिवारिक अथवा सामाजिक हिंसा, चिड़चिड़ापन अथवा अन्य कारणों से जूझ रहे हैं। एकाकीपन बढ़ने से वे ज्यादा आक्रामक और विध्वंसक सोच की तरफ बढ़ने लगे हैं। घर में बच्चों के लिए स्वस्थ, सुरक्षित, और प्रेमपूर्ण वातावरण बनाने के साथ अभिभावकों को अपने बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए। स्कूलों में काउंसलर और मानसिक स्वास्थ्य परामर्शदाता की व्यवस्था होनी चाहिए, जो बच्चों की मानसिक समस्याओं को समझें और उनका समाधान कर सकें। सबसे बड़ी बात यह कि शिक्षकों को बच्चों के आचरण और उनकी समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए प्रशिक्षण देना होगा। ऐसा करने पर वे बच्चों के चाल-चलन की बारीकी से निगरानी कर सकेंगे। बच्चों के व्यवहार और उनके भीतर घर करती प्रवृत्तियों पर मनोवैज्ञानिक पहलू से विचार किए बिना समस्या को कैसे दूर किया जा सकेगा?

बच्चों से जुड़ी हिंसा की इन वीभत्स एवं त्रासद घटनाओं से जिन्दगी इतनी सहम गयी है कि गलत धारणाओं को मिटाने के लिये इस तरह की विकृत सोच एवं तथाकथित विकास से जुड़े शत्रु को पीठ के पीछे नहीं, सामने रखना होगा। सोचना होगा कि खुशहाली का पैमाना सिर्फ आर्थिक सम्पन्नता, शक्ति एवं सत्ता नहीं हो सकता। हमें मानवीय मूल्यों के लिहाज से भी विकास की परख करनी होगी। बच्चों के भीतर हिंसा मनोरंजन की जगह ले रही है। इसी का नतीजा है कि छोटे-छोटे स्कूली बच्चे भी अपने किसी सहपाठी से रंजिश के चलते उस पर गोली चलाते देखे गये हैं।

– :सौजन्य :–

ईवी ड्राइव द फ्यूचर

ईवी को लेकर चीन पर अंग्रेजों ने कसा शिकंजा, जिनपिंग की निकल गई अकड़, दादागिरी करने वाले अब दे रहे हैं नियमों की दुहाई

परिवहन विशेष न्यूज

चीन यूरोपीय संघ के एक फैसले से नाराज हो गया है। चीनी अधिकारी और उद्योग जगत के लोग यूरोपीय संघ से नाराज हो गए। दरअसल, यूरोपीय संघ ने एक नया मसौदा जारी किया है जिसमें चीनी इलेक्ट्रिक वाहनों के खिलाफ जांच करने की बात कही गई है। इससे चीन बुरी तरह आहत हुआ है। चीन ने कहा कि यूरोपीय संघ का यह फैसला चीन और यूरोपीय संघ के बीच आपसी विश्वास और सहयोग को गंभीर रूप से कमजोर करता है, क्योंकि इस फैसले से यूरोपीय संघ के बाजार में चीनी कंपनियों पर भरोसा कम होगा।

विशेषज्ञों ने कहा कि यूरोपीय संघ की इस घोषणा से जिसमें चीनी इलेक्ट्रिक वाहन निर्माताओं के खिलाफ भारी टैरिफ दरें शामिल हैं, ने विवाद को सुलझाने के उद्देश्य से दोनों पक्षों के बीच चल रही बातचीत में और मुश्किलें पैदा कर दी हैं।

चीन के वाणिज्य मंत्रालय ने बुधवार, 21 अगस्त को चीन के घरेलू उद्योग के अनुरोध पर कुछ यूरोपीय संघ के डेयरी उत्पादों की जवाबी जांच शुरू की। चीनी विशेषज्ञों ने कहा कि जांच उचित है क्योंकि यह घरेलू उद्योग के आवेदन के आधार पर और डब्ल्यूटीओ के नियमों के अनुसार शुरू की गई थी। हालांकि, यह ईसी की संरक्षणवादी जांच से पूरी तरह अलग है जो डब्ल्यूटीओ के नियमों का उल्लंघन करती है।

यूरोपीय संघ ने चीनी इलेक्ट्रिक वाहन निर्माताओं के खिलाफ़ 36.3 प्रतिशत की अधिकतम टैरिफ़ दर को बनाए रखने का फ़ैसला किया है, जबकि टेस्ला द्वारा चीन में निर्मित इलेक्ट्रिक वाहनों पर यह दर 9 प्रतिशत है। इस फ़ैसले से नाराज़ होकर कई चीनी मंत्रालयों और उद्योग समूहों ने इस कदम की निंदा की है।

चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माओ निंग ने ईसी की जांच को संरक्षणवाद और राजनीति से प्रेरित कार्रवाई बताया। उन्होंने कहा कि ईसी की जांच तथ्यों की अनदेखी करती है और डब्ल्यूटीओ के नियमों के खिलाफ है।

नई बैटरी के साथ अपडेट हुआ बजाज चेतक इलेक्ट्रिक स्कूटर, देखकर उड़ जाएगी कई लोगों की नींद

परिवहन विशेष न्यूज

बजाज इलेक्ट्रिक स्कूटर को नए बैटरी पैक के साथ अपडेट करने की तैयारी कर रही है। रिपोर्ट के मुताबिक नया बजाज चेतक ज्यादा रेंज देगा।

बताया जा रहा है कि कंपनी ने बैटरी सेल सप्लायर को पहले ही बदल दिया है। इसकी नई बैटरियों में हाई एनर्जी-डेंसिटी सेल कंस्ट्रक्शन है, जिससे इनकी रेंज 126 से 136 किलोमीटर तक बढ़ सकती है।

कंपनी ने नए बैटरी पैक के साथ चेतक स्कूटर की लॉन्च टाइमलाइन के बारे में जानकारी नहीं दी है।

चेतक 3201 स्पेशल एडिशन ने न केवल बाजार में हलचल मचा दी है, बल्कि इलेक्ट्रिक वाहन प्रेमियों के बीच भी यह तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इसकी आकर्षक कीमत और बेहतर बैटरी लाइफ ने इसे एक प्रतिस्पर्धी उत्पाद बना दिया है।

चेतक 3201 स्पेशल एडिशन की सबसे बड़ी खासियत इसकी बैटरी है, जो 3.2 kWh की क्षमता के साथ आती है और 136 किलोमीटर की दूरी तय कर सकती है। यह प्रीमियम वेरिएंट से ज़्यादा है जो 126 किलोमीटर की रेंज देता है। नई बैटरी तकनीक और जबरदस्त एनर्जी डेंसिटी की वजह से इसमें सुधार किया गया है। जिसकी वजह से यह स्कूटर न सिर्फ़ दूरी तय करने में सक्षम है, बल्कि बिजली की खपत में भी किफायती है।

बजाज ने चेतक 3201 को नई बैटरी सेल तकनीक का इस्तेमाल करके और भी बेहतर बनाया है। इससे न केवल रेंज में सुधार होता है बल्कि समग्र प्रदर्शन में भी सुधार होता है। अगर इसी तरह की बैटरी तकनीक का इस्तेमाल दूसरे वेरिएंट में भी किया जाता है तो इससे बजाज का पोर्टफोलियो और मजबूत होगा।

हमें अपना बुनियादी ढांचा विकसित करने की आवश्यकता : प्रह्लाद जोशी

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री प्रह्लाद जोशी ने बृहस्पतिवार, 22 अगस्त को कहा कि भारत प्रतिभा, जनशक्ति और क्षमता से भरपूर है, इसलिए हमें आगे बढ़ने तथा देश में और अधिक विनिर्माण करने की आवश्यकता है।

प्रह्लाद जोशी 22 अगस्त को राष्ट्रीय परीक्षण शाला (एनटीएच) में इलेक्ट्रिक वाहन परीक्षण सुविधा की आधारशिला रखने के लिए बेंगलुरू में थे।

नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की भी जिम्मेदारी संभाल रहे जोशी ने कार्यक्रम में कहा, "प्रौद्योगिकी को उन्नत बनाना बहुत जरूरी है। हमें अपनी प्रणाली, अपना बुनियादी ढांचा विकसित करने की जरूरत है। इस दिशा में, मेरे गृह राज्य में पहली ईवी बैटरी परीक्षण सुविधा खोली जाएगी।"

उन्होंने कहा कि नरेन्द्र मोदी सरकार का प्रत्येक निर्णय आपस में जुड़ा हुआ है और यह 'आत्मनिर्भरता' की दिशा में एक कदम है।

प्रह्लाद जोशी ने कहा, "उदाहरण के लिए, हमारी योजना 2030 तक भारतीय सड़कों पर 30 प्रतिशत ईवी वाहन लाने की है। लेकिन हम यह भी चाहते हैं कि ईवी के लिए इस्तेमाल की जाने वाली बिजली नवीकरणीय हो, इसलिए हम बड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा को बढ़ावा दे रहे हैं। हम एक करोड़ घरों में निःशुल्क सौर ऊर्जा इकाई लगाने पर ध्यान दे रहे हैं, ताकि हमें नवीकरणीय ऊर्जा तक पहुंच मिल सके।"

उन्होंने एनटीएच से अधिक लोगों को प्रशिक्षित करके तथा ईवी परीक्षण जैसी अधिक सुविधाएं स्थापित करके अपनी परीक्षण क्षमता में विविधता लाने का भी आग्रह किया।

एनटीएच विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण और गुणवत्ता आश्वासन में अग्रणी रहा है। यह उपभोक्ता मामले विभाग के अधीन कार्य करता है।

केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी ने कहा, "सरकार इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसे हर संभव सहायता प्रदान करेगी। एनटीएच को पहले ही भारत में सेंट्रल विस्टा और मेट्रो रेल जैसी कुछ प्रतिष्ठित परियोजनाएं मिल चुकी हैं। इसलिए, इसे तीन साल में 100 करोड़ रुपये की कंपनी बनने का लक्ष्य रखना चाहिए।"

केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी ने कहा कि बेंगलुरू के अलावा, सरकार की मुंबई और कोलकाता में भी ईवी परीक्षण सुविधाएं स्थापित करने की योजना है।

राजस्थान की कम पढ़ी-लिखी ग्रामीण महिलाएं बन रही हैं 'सोलर मम्मा', देश-विदेश में तैयार कर रही हैं इंजीनियर

परिवहन विशेष न्यूज

अजमेर जिले में समाज कार्य अनुसंधान केन्द्र तिलोनिया (बेयरफुट कॉलेज) में हमारी ग्रामीण महिलाएं सोलर इंजीनियर एवं सोलर मम्मा के नाम से अलग से पहचान बनाई है। इस केन्द्र में देश के विभिन्न राज्य ही नहीं बल्कि विदेशों से भी महिलाएं प्रशिक्षण लेने आती हैं। अंग्रेजी का विशेष ज्ञान नहीं होने के बावजूद विदेशी महिलाओं को सोलर उपकरण तैयार करने का प्रशिक्षण ग्रामीण महिलाएं दे रही हैं।

हाल ही 30 जुलाई को साउथ अफ्रीका से महिला, युवा और दिव्यांग विभाग गवर्नमेंट ऑफ साउथ अफ्रीका और फिक्की के सहयोग से 22 महिलाओं का एक दल सौर ऊर्जा का प्रशिक्षण प्राप्त करके गया है।

96 देशों में अब तक सोलर ऊर्जा यह मुहिम पहुंची है, जहां अब सोलर का काम हो रहा है।

1700 विदेशी महिलाएं यहां आकर प्रशिक्षण ले चुकी हैं, वे अब सोलर उपकरण तैयार कर रही हैं।

1300 महिलाएं भारत देश के विभिन्न राज्यों की भी प्रशिक्षित हुई हैं।

100000 से अधिक लोग संस्थान का प्रतिवर्ष भ्रमण करने आते हैं।

2009 में भारत सरकार के (आईटेक) कार्यक्रम के तहत संस्था के इस ट्रेनिंग मॉडल को मान्यता मिली। सबसे पहले दुनिया के ऐसे गांवों का चयन किया गया जो कि बिजली की पहुंच से काफी दूर थे। उन गांवों का सर्वे करके कम पढ़ी-लिखी अथवा अनपढ़ ग्रामीण महिलाओं को सोलर प्रशिक्षण के माध्यम से बेयरफुट सोलर इंजिनियर बनाने के लिए तिलोनिया में 6 माह का प्रशिक्षण दिया गया। बाद में ये महिलाएं 'बेयरफुट सोलर इंजिनियर' के रूप में अपने गावों को रोशन कर पाई।

लीला देवी, मगन कंवर, माया देवी, उर्मिला शर्मा, लाड़ा देवी, फूलवंती, शहनाज़ आदि महिलाएं सोलर मास्टर ट्रेनर के रूप में प्रशिक्षण दे रही हैं।

संस्था ने वर्ष 1979 से सौर ऊर्जा के क्षेत्र में कार्य करना प्रारंभ किया। राष्ट्रीय स्तर पर सर्वप्रथम लद्दाख जैसे सुदूर और दुर्गम क्षेत्रों को सोलर ऊर्जा से रोशन किया। इस सफलता के साथ आगे बढ़ते हुए वर्ष 2005 में अफगानिस्तान से आए प्रशिक्षु दल के साथ ही विदेशी प्रशिक्षण की शुरुआत हुई।

मैक्सिको, पेरू, चिली, ब्राजील, ग्वाटेमाला, अर्जेंटिना, क्यूबा, कोलंबिया,

बोलिविया, मोरिटानिया, माली, सेनेगल, गांबिया, इथोपिया, टोगो, घाना, बेनिन, कैमरून, नामीबिया, जिम्बाब्वे, साउथ अफ्रीका, नाइजीरियाई, जॉर्डन, अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान, श्रीपीएनजी, किरिबाती, पलाऊ, माइक्रोनेशिया आलंका, बांग्लादेश, म्यांमार, कंबोडिया, मलेशिया, फिलिपिंस आदि देशों की महिलाएं सौलर ऊर्जा का प्रशिक्षण ले चुकी हैं।

महिंद्रा की पॉपुलर कारों को मिलेगा इलेक्ट्रिक अवतार, थार से लेकर स्कॉर्पियो तक लिस्ट में शामिल

नई दिल्ली। महिंद्रा ने पिछले साल Scorpio N-बेस्ड Global Pik Up और Thar.e कॉन्सेप्ट को पेश किया था। 15 अगस्त 2023 में हुए इस कार्यक्रम के दौरान, कंपनी ने अपनी कई BE और XUV.e इलेक्ट्रिक SUV के लॉन्च टाइमलाइन सहित अपनी भविष्य की योजनाओं का भी खुलासा किया था। यह भी पुष्टि की गई कि कंपनी की ICE SUV इलेक्ट्रिक होंगी। आइए, इनके बारे में जान लेते हैं।

Bolero.e और Scorpio.e

Bolero MUV और Scorpio SUV दोनों को भविष्य में इलेक्ट्रिक पावरट्रेन से लैस किए जाने की उम्मीद है। उम्मीदों के विपरीत, नई महिंद्रा स्कॉर्पियो.ई और बोलेरो.ई लैडर फ्रेम प्लेटफॉर्म का उपयोग नहीं करेगी। इसके बजाय, ये व्यापक रूप से INGLO के रूप में जानी जाने वाले डेडिकेटेड स्केटबोर्ड EV आर्किटेक्चर पर आधारित हो सकती हैं। ये प्लेटफॉर्स जल्द ही XUV.e8 इलेक्ट्रिक SUV में डेब्यू करेगी।

Thar.e

Thar.e के लिए अनुकूलित INGLO P1 आर्किटेक्चर होगा, जिसमें लंबा व्हीलबेस और हाई ग्राउंड क्लीयरेंस शामिल है। वैश्विक स्तर पर कई कार निर्माताओं ने बॉडी-ऑन-फ्रेम चेसिस डिजाइन को बनाए रखा है, इसे इलेक्ट्रिफिकेशन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुकूलित किया है और महिंद्रा ने भी इस दृष्टिकोण पर विचार किया हो सकता है।

हालांकि, कंपनी ने पैकेजिंग लाभों के लिए मुख्य रूप से INGLO प्लेटफॉर्म को चुना है। महिंद्रा थार.ई में बैटरी को फ्लोर के नीचे रखा गया है। इसके अतिरिक्त, थार.ई के पहिये इंटीरियर स्पेस को अधिकतम करने के लिए किनारों पर स्थित हैं।

Scorpio.e

थार की तरह ही ये मॉडल भी सर्वश्रेष्ठ-इन-क्लास एप्रोच, डिपार्चर और ब्रेकओवर एंगल का दावा कर सकते हैं। इन वाहनों के इंटीरियर में एडवांस कनेक्टिविटी विकल्प और फीचर्स शामिल होने की उम्मीद है। महिंद्रा ने संकेत दिया कि स्कॉर्पियो एन-आधारित पिकअप ट्रक का प्रोडक्शन वर्जन 2025 के मध्य तक उपलब्ध होने की उम्मीद है।

Thar.e और Scorpio.e दोनों में 4WD लेआउट शामिल होने की पुष्टि की गई है। महिंद्रा इसके केबिन में रिसाइकिल मैटेरियल का उपयोग कर सकती है। इसे साल 2026 में पेश किए जाने की संभावना है।

झुनझुनवाला ग्रुप देवास में 1850 करोड़ रुपये के निवेश से लगाएगी लिथियम आयन बैटरी में लगने वाला एनोड का प्लांट

परिवहन विशेष न्यूज

मध्य प्रदेश का देवास भी इलेक्ट्रिक वाहन क्रांति में अपना अहम योगदान देने के लिए तैयार हो रहा है। मध्य प्रदेश की इस औद्योगिक नगरी में झुनझुनवाला ग्रुप इलेक्ट्रिक वाहनों में इस्तेमाल होने वाली लिथियम आयन बैटरी के लिए एनोड तैयार करने का उद्योग शुरू कर रहा है। देवास जिले के सिरसौदा औद्योगिक क्षेत्र में जमीनी स्तर पर काम शुरू हो गया है। चुनाव से पहले हुए निवेशक सम्मेलन में झुनझुनवाला ग्रुप ने मध्य प्रदेश में 1850 करोड़ रुपए निवेश करने पर सहमति जताई थी। उसी के तहत देवास में यह प्लांट लगाया जा रहा है।

इसकी स्थापना से न केवल हजारों रोजगार सृजित होंगे बल्कि कई छोटे सहायक उद्योग भी विकसित होंगे। इससे न केवल देवास बल्कि मध्य प्रदेश को भी राजस्व और अन्य लाभ प्राप्त होंगे। एचईजी लिमिटेड की सहायक कंपनी टीएसीसी सिरसौदा औद्योगिक क्षेत्र में एक इकाई स्थापित कर रही है। यह ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड निर्माण करने वाली कंपनी है, जिसने देवास में 1850 करोड़ रुपये का निवेश किया है। इसका भूमिपूजन हो चुका है। पर्यावरण विभाग द्वारा दी गई महत्वपूर्ण अनुमति भी प्राप्त हो गई हैं।

एलएनजे भीलवाड़ा समूह के अध्यक्ष रवि झुनझुनवाला का कहना है कि समूह का यह नया उद्यम 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत की यात्रा को गति देने की दिशा में एक कदम है। यह परियोजना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत अभियान से प्रेरित है।

कंपनी के सीईओ अंकुर खेतान कहते हैं, यह प्लांट करीब 20 गीगावाट प्रति घंटे की सेल निर्माण क्षमता के साथ काम करेगा। इससे करीब एक हजार नए रोजगार सृजित होंगे। लिथियम आयन बैटरी के कलपुर्जे स्थानीय स्तर पर बनाने से सेल उत्पादन की लागत कम होगी, जिससे देश की ईवी क्रांति को आगे बढ़ाने और विदेशों से आयात पर निर्भरता कम करने में मदद मिलेगी।

देवास में कंपनी का काम देख रहे एलएन श्रीवास ने बताया कि काम शुरू हो गया है। 2025 तक उत्पादन शुरू होने की उम्मीद है।

नदिया तू सागर हो जा'

सिद्धगुरु प्रमोद जी

जब तक हम शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्वतंत्रता हासिल नहीं कर लेते, तब तक हर स्वतंत्रता असल में अधूरी है। कोई एक नदी जब सागर से जा मिलती है, तो क्या होता है? अक्सर हम समझते हैं कि नदी का अस्तित्व समाप्त हो गया, वह सागर में विलीन हो गई, खो गई, गुम गई। पर क्या सचमुच नदी का अस्तित्व समाप्त हो गया। सच यह है कि अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ, पहचान बदल गई। वह एक नदी थी, वह सागर हो गई। यह तो उपलब्धि है, असल में तो खोया कुछ भी नहीं, पहचान बड़ी हो गई, सम्मान बड़ा हो गया, तो खोया क्या? हम नदी की तरह के हैं, अपनी आसक्ति की जंजीरों में बंधे हैं, अपनी पहचान की जंजीरों में बंधे हैं। लालच कर रहे हैं और आगे नहीं बढ़ रहे। यही सच जब हमारा अनुभव बन जाता है, तो हम जान लेते हैं कि हम अगर परमात्मा में खो जाएंगे, तो सीमाएं टूट जाएंगी

संत कबीर की वाणी में हमेशा एक ही संदेश होता है, और वह संदेश है कि सारी कायनात उसी परमात्मा की रचना है, और परमात्मा को किसी विधि-विधान की जरूरत नहीं है, किसी लाउडस्पीकर की जरूरत नहीं है, किसी व्रत-उपवास की जरूरत नहीं है, किसी तीर्थ यात्रा की जरूरत नहीं है, किसी मंदिर-मस्जिद-चर्च की जरूरत नहीं है। परमात्मा को तो प्रेम, समर्पण और श्रद्धा चाहिए। बुद्ध हों, कबीर हों, गुरु नानक हों या संत रविदास हों, सबने एक ही बात कही है। शब्द अलग हो सकते हैं, होते ही हैं, पर संदेश एक ही है, और संदेश यह है कि व्रत, उपवास, मंदिर, मस्जिद, चर्च, कर्मकांड आदि सब शुरुआती खिलौने हैं, ये आध्यात्मिकता की प्री-नर्सरी के खिलौने हैं। असली आध्यात्मिक निश्छल अनासक्त प्रेम में है, सबके लिए प्रेम में है, इनसान और जीव जगत ही नहीं, जड़-चेतन, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि सबके लिए प्रेम, निश्छल प्रेम, अनासक्त प्रेम ही आध्यात्मिकता है। यह प्रेम किसी जान-पहचान का मोहताज नहीं है, किसी लेन-देन का मोहताज नहीं है, किसी रिश्ते का मोहताज नहीं है, बस प्रेम है, सबके लिए है, और सबके लिए एक समान प्रेम है। इस प्रेम का कोई कारण नहीं है, यह बस छलकता ही रहता है, अनायास। संत कबीर कहते हैं कि इस प्रेम के लिए किसी तीर्थ पर जाने की जरूरत नहीं है, जप, तप, व्रत, उपवास की जरूरत नहीं है, इसके लिए तो परमात्मा में आस्था की जरूरत है, उस आस्था में विश्वास की जरूरत है, और इस ब्रह्मांड के जीव जगत ही नहीं, बल्कि हर जड़-चेतन के प्रति प्रेम की जरूरत है, उसके सम्मान की जरूरत है।

इतना ही काफी है। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि मैं जो कुछ भी करता हूं, वही पूजा है, और अपने कामों के लिए जहां कहीं भी जाता हूं, वही परमात्मा की प्रदक्षिणा है, क्योंकि परमात्मा तो हर जगह है, हर गति में, चलने-फिरने में, मूवमेंट में, उसी परमात्मा की प्रदक्षिणा हो रही है। मुझे परमात्मा की अर्चना के लिए कोई दीपक या धूप-बत्ती जलाने की भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह सारा ब्रह्मांड ही परमात्मा की आरती कर रहा है। सूर्य, चंद्रमा और ये अनगिनत तारे दीपक हैं, यह सुगंधित-सुवासित हवा धूप-अगरबत्ती है। हम सब मानते ही हैं कि जर्रे-जर्रे में उसी परमात्मा का नूर है। फूल में, पौधे में, पेड़ में, हिरन में, बाघ में, इनसान में, सूर्य में, चंद्र में, तारों में, आकाश में, हवा में भगवान है, तो मिट्टी में, पत्थर में, लोहे में, लकड़ी में, पेड़ से टूट कर गिरे सूख चुके पत्ते में भी वही परमात्मा है, उसी का नूर है। वो खुदा जिसका नूर जर्रे-जर्रे में जगमगाता है, और वो पत्ता जो पेड़ से टूट कर, गिर कर सूख गया है, उसमें भी उसी का अक्स मुस्कुराता है। आध्यात्मिकता तब होती है, जब यह सच समझ में आ जाता है। प्रेम क्या है? जिसे 'ढाई आखर प्रेम का' कहा गया है, वह असल में क्या है, उसकी पहचान क्या है, उसकी खूबी क्या है? गौतम बुद्ध की शिक्षाओं में कहा गया है कि जब प्रेम पूर्णतः निरासक्त हो, अकारण हो, सबके लिए हो, सार्वभौम हो, करुणामय हो, सामने वाले की खुशी में हम खुश होते हों, सामने वाले की सहायता करते हुए हम सहानुभूतिपूर्ण हों और हमें सच्ची खुशी हासिल हो, उसमें अहसान की भावना न हो, अहंकार की भावना न हो, और यह प्रेम और सहायता की भावना सबके लिए हो, तभी वह सच्चा प्रेम है। सवाल उठता है कि निरासक्त स्नेह वाले प्रेम का अभ्यास कैसे हो? प्रेम का अभ्यास करने के लिए हमें पहले खुद से प्यार करना सीखना चाहिए। उसके बाद वही प्रेम परिवार के सभी सदस्यों के लिए जगाना सीखना चाहिए। यह इतना परिपक्व और निष्पक्ष हो कि सास-बहू, देवरानी-जेठानी आदि रिश्तों में भी वैमनस्य, संपत्ति के लिए षड्यंत्र आदि तिरोहित हो जाएं। उसके बाद पड़ोसियों, गांवों या कस्बों, फिर पूरे देश और आखिरकार पूरी दुनिया में सभी प्राणियों के बीच प्रेम और कृपा के विस्तार का नाम ही सच्चा प्रेम है।

जब हम सबसे प्रेम करने लगते हैं, अनायास प्रेम करने लग जाते हैं, बिना किसी उद्देश्य के और बिना किसी लालच के प्रेम करने लग जाते हैं तो हमारा हाथ हमेशा किसी जरूरतमंद की सहायता के लिए बढ़ा ही रहता है। अक्सर हम पढ़ते सुनते आए हैं कि दान किसी सुपात्र को ही देना चाहिए। हम 'सहज संन्यास मिशन' के अनुगामी संन्यासी इसे एक बिल्कुल ही अलग नजरिये से देखते हैं। हम यह मानते हैं कि दान देने के लिए लेने वाले की पात्रता नहीं देखी जाती, इसके बजाय देखना यह होता है कि देने वाला सुपात्र है या नहीं। महत्वपूर्ण यह है कि देने वाला किस भावना से दे रहा है, किस मन्शा से दे रहा है, किस लालच के वशीभूत होकर दे रहा है। देने वाले को सुपात्र होना चाहिए। हम एक और भ्रम में जी रहे हैं कि यह संसार दुखों का घर है। गुरु नानक देव जी ने जब 'नानक दुखिया सब संसार' कह कर एक सार्वभौम समस्या की तरफ इशारा किया तो 'सो सुखिया जो नाम अधार' कह कर इस समस्या का हल भी साथ ही बता दिया। गौतम बुद्ध ने कहा कि दुख है, दुख का कारण भी है, पर इस दुख से पूर्ण रूप से छुटकारा हो सकता है और यह दुख ही असल में मुक्ति का मार्ग है, क्योंकि यह दुख हमें घमंड से दूर करता है, विनम्र होना सिखाता है, कृतज्ञ होना सिखाता है।

अभी पिछले ही हफ्ते हमने स्वतंत्रता दिवस मनाया है, पर क्या हम सचमुच स्वतंत्र हैं या अपनी इच्छाओं के, अपनी वासनाओं के, अपने लालच के, अपनी घृणा के और अपने डर के गुलाम हैं? हम अभी भी इन्हीं जंजीरों में बंधे हैं या हम इस कारावास से बाहर आ गए हैं? जब तक हम शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्वतंत्रता हासिल नहीं कर लेते, तब तक हर स्वतंत्रता असल में अधूरी है। कोई एक नदी जब सागर से जा मिलती है, तो क्या होता है? अक्सर हम समझते हैं कि नदी का अस्तित्व समाप्त हो गया, वह सागर में विलीन हो गई, खो गई, गुम गई। पर क्या सचमुच नदी का अस्तित्व समाप्त हो गया। सच यह है कि अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ, पहचान बदल गई। वह एक नदी थी, वह सागर हो गई। यह तो उपलब्धि है, असल में तो खोया कुछ भी नहीं, पहचान बड़ी हो गई, सम्मान बड़ा हो गया, तो खोया क्या? हम नदी की तरह के हैं, अपनी आसक्ति की जंजीरों में बंधे हैं, अपनी पहचान की जंजीरों में बंधे हैं। लालच कर रहे हैं और आगे नहीं बढ़ रहे। यही सच जब हमारा अनुभव बन जाता है, तो हम जान लेते हैं कि हम अगर परमात्मा में खो जाएंगे, विलीन हो जाएंगे तो सीमाएं टूट जाएंगी, जंजीरें टूट जाएंगी, हम असीम हो जाएंगे, हम खुद ब्रह्मांड हो जाएंगे, तब हम सिर्फ परमात्मा का अंश भर नहीं होंगे, बल्कि खुद परमात्मा ही हो जाएंगे। आखिर यही तो हमें समझना है।

संपादक की कलम से

कहां जाएं बेटियां-बहनें

प्रख्यात क्रिकेटर सौरव गांगुली को भी विरोध-प्रदर्शन के लिए सडक़ पर उतरना पड़ा है। पत्नी डोना गांगुली भी उनके साथ होंगी। उन्हें बर्बर बलात्कार, महिलाओं पर अत्याचार और कार्यस्थलों पर असुरक्षा सरीखे मुद्दों पर विरोध जताना पड़ा है, क्योंकि सौरव-डोना भी एक बेटी के माता-पिता हैं। इधर कुछ घटनाओं ने उनकी आत्मा को झकझोर दिया है। सर्वोच्च अदालत में प्रधान न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता में तीन न्यायाधीशों की पीठ कोलकाता रेप-मर्डर कांड की सुनवाई कर रही है। सर्वोच्च अदालत ने इस कांड का स्वतः संज्ञान लिया है। बंगाल सरकार और पुलिस को खूब फटकार लगाई है और उनकी भूमिका पर कई सवाल उठाए हैं। सरकारें बड़ी मोटी खाल की होती हैं। फटकार का उन पर कोई असर नहीं पड़ता। बेशक संदर्भ कोलकाता अस्पताल में एक युवा ट्रेनी डॉक्टर के साथ बर्बर बलात्कार और बाद में हत्या का है, लेकिन शीर्ष अदालत का सरोकार राष्ट्रीय है। खासकर अस्पतालों में महिला डॉक्टर और नर्स आदि कैसे सुरक्षित रहें, इसके मद्देनजर एक टास्क फोर्स बनाने और अस्पतालों की सुरक्षा केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) को सौंपने के महत्वपूर्ण फैसले सुनाए गए हैं। प्रधान न्यायाधीश की यह टिप्पणी देशवासियों की आत्मा में लगातार गूंजती रहनी चाहिए कि बदलाव के लिए देश एक और दुष्कर्म और हत्या का इंतजार नहीं कर सकता। टास्क फोर्स को अपनी अंतरिम रपट तीन सप्ताह में देनी है और अंतिम रपट दो माह की अवधि में देनी है। फोर्स महिला सुरक्षा के उपाय सुझाएगी। गौरतलब यह है कि 'निर्भया कांड' के एक साल बाद पूर्व प्रधान न्यायाधीश जस्टिस जेएस वर्मा की अध्यक्षता में सख्त 'पॉक्सो एक्ट' बनाया गया। उसके बाद 'पॉश' (प्रिवेंशन ऑफ सेक्सुअल हैरासमेंट ऑफ वूमन एट वर्कप्लेस) एक्ट बनाया गया। फांसी की सजा का प्रावधान रखा गया। क्या इन कानूनों ने बलात्कारियों को डराया? हमारी व्यवस्था में कई विसंगतियां हैं। करीब 2.43 लाख केस फास्ट ट्रैक कोर्ट में लंबित पड़े हैं। इनमें पॉक्सो केस भी हैं। हर रोज बलात्कार के केस आ रहे हैं और सरकारें फास्ट ट्रैक कोर्ट के आश्वासन देती रहती हैं। पीड़िता को इंसाफ मिलना बहुत दूर की कौड़ी है। बहरहाल अब मौजूदा संदर्भ में सर्वोच्च अदालत के अंतिम फैसले की प्रतीक्षा है, लेकिन आदमी की 'पाशविक हवस' अब दरिंदगी की हदें भी पार कर चुकी है। हम बलात्कारियों, हत्यारों को इनसान नहीं मान सकते, वे 'जानवर' से भी अधिक खौफनाक हैं। अब हालात ये बन गए हैं कि बेशक बेटी 3-4 साल की हो और स्कूल जाना शुरू ही किया हो। बेटी बड़ी होकर कॉलेज में पढ़ती हो अथवा गहन पढ़ाई करके डॉक्टर बनी हो और एक सरकारी अस्पताल में कार्यरत हो। बेटी कहीं जाने के लिए राज्य परिवहन की बस में बैठी हो या बाजार में किसी काम से गई हो। उम्र 60 पार कर चुकी हो और विधवा महिला हो! अब ऐसी बेटियां, नाबालिग या बालिग लड़कियां अथवा उम्रदराज विधवा महिलाएं कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं। वे सामूहिक दुष्कर्म का शिकार हो रही हैं। आखिर यह देश कैसा बन गया है? कोई भी राज्य इन जघन्य, बर्बर अपराधों से अछूता नहीं है। अभी तो सर्वोच्च अदालत के सामने वे ही तथ्य और आंकड़े आएंगे, जो पुलिस ने दर्ज किए होंगे। जिन्हें डर, खौफ के कारण दर्ज नहीं कराया गया अथवा पुलिस ने टालमटोल कर अपराध पर मिट्टी डाल दी, उन अपराधों का संज्ञान कौन लेगा? 2012 के नई दिल्ली के 'अमानवीय' निर्भया कांड के बाद भी 3.33 लाख बलात्कार किए गए हैं, जबकि 1971-2022 के लंबे कालखंड में 8.23 लाख बलात्कार के केस दर्ज किए गए थे। बलात्कार किस गति और अनुपात से बढ़ रहे हैं, आश्चर्य होता है। क्या देश में बेटियां, बहनें और महिलाएं सिर्फ 'बलात्कार की वस्तु' बनकर रह गई हैं? क्या अब वे 'देवी' नहीं रहीं? सर्वोच्च अदालत के न्यायाधीशों ने ऐसे हालात, परिवेश, अपराधों पर चिंता जताई है। उससे क्या होगा? कल ही 32 लंबे सालों के बाद औरतों को इंसाफ मिला है-आधा, अधूरा। 1992 में 100 लड़कियों के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया था। विशेष अदालत ने सिर्फ 6 अपराधियों को आजीवन कारावास की सजा दी है। मौजूदा संदर्भों में क्या न्याय मिलेगा, देखते हैं।

राय

आर्थिक डेस्टिनेशन-5

हिमाचल में राजनीतिक डेस्टिनेशन को आर्थिक डेस्टिनेशन में बदलने की जरूरत को अगर सरकारें समझ लें, तो हर नीति में बदलाव और बजट की प्राथमिकताओं में आत्मनिर्भरता का उल्लास भर जाएगा। दरअसल राजनीतिक डेस्टिनेशन बनाते-बनाते नेताओं के आपसी द्वंद्व और सत्ता-विपक्ष के बीच वैमनस्य के भाव ने विकास का ऐसा मॉडल चुन लिया, जो क्षेत्रवाद के फायदे में प्रदेश के आत्मबल और आत्मविश्वास के लिए हानिकारक सिद्ध हो गया। कुछ ऐसे अनावश्यक कार्यालय, संस्थान व परियोजनाओं पर व्यय बढ़ता गया, जो अंततः अनुचित साबित हुईं। सबसे अधिक असफल राजनीतिक डेस्टिनेशन सत्ता के ओहदों ने स्थापित किए। पालमपुर में कृषि विश्वविद्यालय या हमीरपुर में भारतीय होटल प्रबंधन की स्थापना के औचित्य पर प्रश्न बताते हैं कि सत्ता राज्य के विवेक पर भारी पड़ती है। हमने हिमाचल को शिक्षा का हब बनाते हुए सोलन में असफल निजी विश्वविद्यालयों के नीचे आर्थिक जमीन बंजर कर दी। अब नौबत यह कि कई स्कूल-कालेजों पर ताले लगेंगे या बोर्ड-निगमों की संख्या घटाई जा सकती है। हिमाचल के बाहर एक समृद्ध हिमाचल बसा है और अगर उसे राज्य में निवेश का अवसर दिया जाए तो कई क्षेत्र मिलकर राज्य का आर्थिक आधार पुख्ता कर सकते हैं। इस दिशा में कांगड़ा एयरपोर्ट विस्तार, ऊना रेल परियोजना व तमाम फोरलेन का निर्माण कई संभावनाओं का श्रीगणेश कर सकते हैं। कांगड़ा एयरपोर्ट विस्तार को अगर सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देखें तो कई आईटी पार्क आकार ले सकते हैं। इस दिशा में जदरांगल में केंद्रीय विश्वविद्यालय परिसर के बजाय आईटी पार्क के रूप में विकसित कर दें, तो कहीं ज्यादा बेहतर हो सकता है। इसके अलावा कांगड़ा, मंडी, हमीरपुर, चंबा और बिलासपुर जिलों में आईटी पार्कों की श्रृंखला में प्रदेश कई नामी कंपनियों के नए पते विकसित कर सकता है।

आर्थिक दृष्टि से पठानकोट-जोगिंद्रनगर रेलवे लाइन की वकालत के बजाय अंब-अंदौरा से ज्वालाजी तक रेलवे विस्तार को 'मंदिर रेल विकास परियोजना' के तहत संभव किया जा सकता है। इस तरह चिंतपूर्णी, चामुंडा, कांगड़ा, ज्वालाजी, नयनादेवी, दियोटसिद्ध, बैजनाथ व तिब्बती मठों के आर्थिक सहयोग से कोंकण रेलवे प्रोजेक्ट की तर्ज पर केंद्र के साथ 50 : 50 प्रतिशत के वित्तीय सहयोग से पूरा किया जा सकता है। हिमाचल के प्रमुख मंदिरों का विकास उक्त रेल परियोजना के साथ आगे चलकर पांच हजार करोड़ की आर्थिकी पैदा कर सकता है। हिमाचल के मंदिर परिसरों को कला केंद्रों के रूप में विकसित करें तो धार्मिक से सांस्कृतिक पर्यटन की क्षमता में निखार आएगा और जहां प्रदेश के कलाकारों व लोककलाओं को संरक्षण व प्रोत्साहन मिलेगा। इतना ही नहीं, दियोटसिद्ध, ज्वालाजी, नयनादेवी, चिंतपूर्णी व कांगड़ा जैसे शहरों का विस्तार धार्मिक नगरियों के रूप में करके पूजा सामग्री व उपहार वस्तुओं के उत्पादन केंद्र के रूप में किया जा सकता है। दियोटसिद्ध के रोट को पेटेंट कराकर अगर इसे एक उत्पाद की तरह बाजार में उतारा जाए तो यह हिमाचल का तोहफा होगा। इसी तरह ज्वालाजी के पेड़े, धूप, शहद व हिमाचली हथकरघा उत्पादों के प्रमुख बिक्री केंद्र के रूप में मंदिर स्थल पारंगत हो सकते हैं। हिमाचल में निवेश की भूमिका में अगर प्रवासी हिमाचलियों के वार्षिक सम्मेलन आयोजित किए जाएं, तो दर्जनों आधुनिक बाजार, मनोरंजन केंद्र, बस स्टैंड, सिटी अस्पताल तथा मल्टीप्लैक्स स्थापित हो सकते हैं। इसी के साथ पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत कई सरकारी शिक्षण व चिकित्सा केंद्र प्रवासी हिमाचलियों की दक्षता एवं प्रोफेशनल अनुभव की क्षमता में स्थानांतरित करके एक नई आर्थिक ऊष्मा पैदा की जा सकती है।

खेल भावना में 'राष्ट्र प्रथम' सर्वोपरि रहे

जरूरत है खिलाडिय़ों को अच्छे खेल प्रशिक्षक, बेहतरीन खेल सुविधाएं मिलें, अंतरराष्ट्रीय स्तर के खेल उपकरण, पौष्टिक खाना, सुरक्षित भविष्य की गारंटी और रहने-ठहरने का सुरक्षित परिवेश मिले तो हमारे खिलाड़ी भी किसी से उन्नीस साबित नहीं होंगे। खेलों को यदि रोजगार प्रदाता क्षेत्र के रूप में भी देखें तो भारत में खेलों को बढ़ावा देने से 4371675 रोजगार के अवसर बन सकते हैं

विश्व में प्रायः खेलों की अनेक प्रतिस्पर्धाएं प्रतिवर्ष अलग-अलग नामों से आयोजित की जाती हैं, जिनमें ओलंपिक खेलों को खेलों के महाकुंभ का दर्जा दिया गया है। विश्व के प्रत्येक खिलाड़ी का सपना इन खेलों में भाग लेकर अपने तथा अपने राष्ट्र के लिए पदक जीतना रहता है। जुआन एंटोनियो समारांच अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के पूर्व अध्यक्ष के अनुसार, 'खेल मित्रता है, खेल स्वास्थ्य है, खेल शिक्षा है, खेल जीवन है और खेल विश्व को एक साथ लाते हैं।' प्रतिवर्ष अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक दिवस 23 जून को मनाया जाता है। इस बार 2024 में इस दिवस का विषय 'चलो चलें और जश्न मनाएं' (लेट्स मूव एंड सेलिब्रेट) था। अंतरराष्ट्रीय खेलों में भारतीय खिलाडिय़ों का पदक तालिका में प्रदर्शन कोई ज्यादा उत्साहवर्धक नहीं रहा है। भारत का ओलंपिक खेलों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हॉकी में रहा है जिसमें भारत ने 8 बार स्वर्ण पदक जीते हैं। पिछले टोक्यो ओलंपिक में हमारा 48वां स्थान था जबकि इस बार खिलाडिय़ों के प्रशिक्षण एवं तैयारियों पर लगभग 500 करोड़ रुपए खर्च किए गए।

पेरिस ओलंपिक में 117 सदस्यीय खिलाडिय़ों की टीम वाले भारत ने केवल छह पदक जीते हैं, जिनमें एक रजत और पांच कांस्य शामिल हैं। वहीं संयुक्त राज्य अमेरिका 40 स्वर्ण, 44 रजत, 42 कांस्य पदकों और कुल 126 पदकों के साथ पहले स्थान पर रहा। अगले 34वें ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों का आयोजन 2028 में अमरीकी शहर लॉस एंजिल्स में होगा। ओलंपिक खेलों का इतिहास काफी पुराना है, लगभग 1200 वर्ष पूर्व प्राचीन ओलंपिक खेलों का आयोजन करवाया गया था। चूंकि यह खेल यूनान की राजधानी एथेंस के निकट ओलंपिया पर्वत के आसपास आयोजित किए गए थे, इसलिए 1896 में पुनः शुरू हुई इन खेलों का नाम भी ओलंपिक खेल रखा गया था, जिसमें उत्तरोत्तर बदलावों को लाकर इन खेलों को बेहद आकर्षक, रोमांचक एवं प्रतिस्पर्धात्मक बनाया जाता रहा है। ओलम्पिक खेलों के जनक बेरोंन पियरे डी कोबर्टीन के सुझाव पर 1913 में ओलम्पिक ध्वज का सृजन हुआ था और जून 1914 में इसका विधिवत उद्घाटन पेरिस में हुआ था। इस ध्वज को सर्वप्रथम 1920 के एंटवर्प ओलम्पिक में फहराया गया। ध्वज की पृष्ठभूमि सफेद है, सिल्क के बने ध्वज के मध्य में ओलम्पिक प्रतीक के रूप में पांच रंगीन एक-दूसरे से मिले हुए छल्ले दर्शाए गए हैं, जो विश्व के 5 महाद्वीपों का प्रतिनिधित्व करने के साथ ही निष्पक्ष एवं भेदभाव से मुक्त स्पर्धा का प्रतीक भी हैं। नीला चक्र यूरोप, पीला चक्र एशिया, काला चक्र अफ्रीका, हरा चक्र ऑस्ट्रेलिया और लाल चक्र उत्तरी एवं दक्षिणी अमरीका महाद्वीपों को दर्शाता है। सन्-1897 में फादर डिडोन द्वारा लेटिन भाषा में रचित 'सिटियस, अल्टीयस, फोर्टियस' को ओलम्पिक के उद्देश्य के रूप में अपनाया गया था जिसका अर्थ है तेज, ऊंचा, बलवान। इसको पहली बार 1920 में ओलम्पिक के उद्देश्य के रूप में एंटवर्प (बेल्जियम) ओलम्पिक खेलों में प्रस्तुत किया गया था।

इसी के साथ ओलम्पिक मशाल को जलाने की शुरुआत 1928 से एम्स्टर्डम ओलम्पिक से हुई थी। 1936 में बर्लिन ओलम्पिक में मशाल के वर्तमान स्वरूप को अपनाया गया था। उसी समय से मशाल को आयोजन स्थल तक लाने का प्रचलन भी शुरू हुआ। इस बार पेरिस ने तीसरी बार 1900, 1924 और 2024 में 33वें ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों की मेजबानी की है। पेरिस ओलंपिक में 32 खेलों की 48 विधाओं की स्पर्धाओं के लिए 329 पदक दांव पर रहे, जिसमें 206 देशों के लगभग 10500 खिलाडिय़ों ने भाग लिया। वर्ष दर वर्ष भारत में खेलों के उन्नयन एवं खिलाडिय़ों की नई पौध को तैयार करने के दावे किए जाते रहे हैं, लेकिन स्कूली स्तर पर खिलाडिय़ों की नर्सरी तैयार करने के दावे अभी भी फीके ही हैं। गांव, कस्बों में तो कोच, खेल परिसर, खेल मैदानोंस जिम एवं अन्य सुविधाओं का नितांत अभाव है ही, वहीं खेलों को एक कॅरियर चॉइस के रूप में अपनाने के लिए युवाओं को तैयार करने के लिए समयबद्ध तैयारी एवं खुले मन से धन आवंटन की दरकार भी है। इस कटु सत्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि आज बड़ी संख्या में युवा वर्ग नशीले पदार्थों के सेवन से अपनी शारीरिक एवं मानसिक सेहत से खिलवाड़ कर रहा है, जिससे उनके घरवाले एवं समाज अलग परेशान हैं।

पुलिस नशीले पदार्थों के व्यापार में संलग्न लोगों पर पूरी तरह से नकेल कसने में कामयाब नहीं हो पा रही है। ऐसे समय में यह आवश्यक हो जाता है कि केंद्र एवं राज्य सरकारें युवाओं की ऊर्जा को खेलों एवं अन्य साहसिक गतिविधियों में नियोजित करने के लिए मुक्त हस्त से बजट आबंटन कर पंचायत स्तर तक खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढांचा तैयार करें और गांव से राष्ट्र स्तर तक योग्य प्रतिभाशाली खिलाडिय़ों की पौध तैयार करने पर निवेश करें। जरूरत है खिलाडिय़ों को अच्छे खेल प्रशिक्षक, बेहतरीन खेल सुविधाएं मिलें, अंतरराष्ट्रीय स्तर के खेल उपकरण, पौष्टिक खाना, सुरक्षित भविष्य की गारंटी और रहने-ठहरने का सुरक्षित परिवेश मिले तो हमारे खिलाड़ी भी किसी से उन्नीस साबित नहीं होंगे। खेलों को यदि रोजगार प्रदाता क्षेत्र के रूप में भी देखें तो 'स्पोर्ट्स फिजिकल एजुकेशन फिटनेस एंड लेजर स्किल्स काउंसिल' के अनुसार, भारत में खेलों को बढ़ावा देने से हमारे देश के भीतर खेल और शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में 4371675 से ज्यादा लोगों के लिए रोजगार के अवसर बन सकते हैं। इनमें स्पोर्ट्स साइंस एंड टेक्नोलॉजी, स्पोर्ट्स मैनेजमेंट, स्पोर्ट्स कोचिंग, स्पोर्ट्स टीचिंग, स्पोर्ट्स इवेंट मैनेजमेंट और स्पोर्ट्स मैन्युफैक्चरिंग आदि क्षेत्रों में रोजगार के मौके बढ़ेंगे। इस लिहाज से देखें तो आने वाले वर्षों में खेलों में निवेश से नई उपलब्धियां हासिल की जा सकती हैं।

तेरे वादे पर जिए हम'

जो शुरू ही नहीं हुआ, उसे आपने खत्म घोषित कर दिया। आज पूरा देश जैसे माला पहनने और पुष्पित अभिनंदन करवाने की जल्दबाजी में लगा नजर आता है। यहां तो उनका उद्घाटन और अभिनंदन कर देने की प्रथा एक साथ बनती नजर आती है। यह केवल स्व नियोजित साहित्य समारोहों में ही नजर नहीं आता, कि आप अपने पैसे से पुस्तक छपवाएं और उसके लोकार्पण के दिन ही अपना अभिनंदन भी करवा लें। इन किताबों के शीर्षक उछालने में भी कोताही नहीं होती। जुमा जुमा आठ दिन हुए साहित्य से लुकाछिपी खेलते हुए और पुस्तक के आवरण पर शीर्षक जमा दिया, 'इस देश के सर्वश्रेष्ठ लेखक।' इतना ही क्यों, कुछ तो यहां अपने आपको विश्व के चुनिंदा लेखकों में से घोषित करते नजर आते हैं। तबीयत नहीं भरी तो इससे आगे जा इस सदी, इक्कीस सदी का सरताज लेखक घोषित कर दिया। यह न पूछ लेना कि आपको यह विशेषण घोषित करने का अधिकार किसने दिया। यह किसी ऐसे निर्णायक मंडल के महानुभावों का नाम ले देंगे, जो स्वयं भी बरसों साहित्य की पहचान के चौराहे पर ठिठके-ठिठके व्यतीत हो गए। जनाब, आजकल महामारी के दिनों में सामाजिक अंतर रख कर जीने का रिवाज बन गया है। इसलिए आपके साहित्य के लिए पाठक वर्ग और आपकी किसी अन्य उपलब्धि के लिए करतल ध्वनि से तालियां बजाते दर्शक वर्ग की जरूरत ही नहीं रही। ऑनलाइन वैबिनार आयोजित कीजिये, इंटरनैट पर अवतरित होकर कल्पना कीजिये कि आप लाखों घरों में एक साथ प्राकशित हो गए। ऑनलाइन इन सम्मान समारोहों ने तो कल पैदा हुए लोगों को भी अंतरराष्ट्रीय व्यक्तित्व बना दिया। बस कल्पना कीजिये, कि लाखों लोग आपके प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वागत कर रहे हैं। आपकी बात कम सुनते हैं, बस तालियां पीटते जा रहे हैं। वैसे बन्धु, आपके पास कहने के लिए था भी क्या, बस इस काबिलेगौर जिक्र के कि आप जैसा अभिभूत कर देने वाला व्यक्तित्व न कोई पिछले जन्म में था, न कोई अगले जन्म में होगा। इस गुजरते जन्म में तो आपकी शोभा अनिवर्चनीय है ही।

जी नहीं, यह बात केवल स्व-प्रचारित लेखकों, नाटक अभिनेताओं, खिलाडिय़ों या गायकों के लिए ही नहीं हो रही। रातोंरात चोला बदल कर अपने महान अवतरण की घोषणा करने वाले आज आपको हर क्षेत्र में नजर आते हैं। कल तक जो सरहदों पर तस्करी और सरकारी दफ्तरों में दलाली खा आपको काम करवा देने का भरोसा दे रहे, आज वही हर प्रकार के असामाजिक, अनैतिक धंधों के विरुद्ध आवाज बुलंद करते नजर आते हैं। आपके सामने भेंट किए गए पैसों को खुर्द-बुर्द कर वे 'रिश्वत लेना और देना गुनाह है' का नारा लगा सामाजिक शुचिता के लिए बलिहान हो जाने का तेवर दिखाते हैं। 'जब तक किसी आरोपी पर आरोप प्रमाणित न हो जाए, वह न तो अपराधी है और न उसे दंड दिया जा सकता है।' बस कानून की इसी पतली गली का इस्तेमाल करके ही आज केवल नेता भवन और पार्टी कार्यालय ही नहीं देश की विधानसभाएं और संसद तक इन मुजरिम चेहरों से भरी नजर आती है। न ये आरोपित अपराधी प्रमाणित होंगे और न ही इन्हें देश का दंड विधान, कानून के रखवालों और समाज के भद्र लोगों की श्रेणी से बाहर कर सकेगा। देश की जिस युवा पीढ़ी को वास्तव में कानून का रखवाला बनना चाहिए था, या अपने सजग चिंतन के साथ समाज को नया रूप देते हुए दिखना चाहिए था, वह भी हैं, पहले रोजगार मेलों का कतारों में खड़े होकर अपने लिए रोजगार की दिलासा प्राप्त कर रहे थे। अब ऑनलाइन रोजगार मेलों में घोषणाओं के भ्रमजाल में जी रहे हैं। जब रोटी की जगह 'थोथा चना बाजे घना' का एहसास का कनस्तर पिटते हुए दुहरा हो गया तो योजना आयोग को महंगा, निष्फल सफेद हाथी कह कर नकार दिया गया। तब जन्म लिया नीति आयोग ने। नए युग में देश के विकास का अग्रदूत बन अभी देश उसके सूत्रपात की प्रसव पीड़ा झेल रहा है।

बाजार में A1 और A2 के नाम से अब नहीं बिकेगा दूध, घी और मक्खन

परिवहन विशेष न्यूज

FSSAI ने कंपनियों को पैकेजिंग के ऊपर से ए1 और ए2 प्रकार के दूध और दूध उत्पादों के दावों को हटाने का निर्देश दिया। FSSAI ने कहा कि उसने ए1 और ए2 संबंधी दावों के मुद्दों की जांच की और पाया कि ए1 और ए2 दूध में अंतर बीटा कैसिन प्रोटीन की संरचना से जुड़ा है। वर्तमान में जो नियम हैं वह इस अंतर को मान्यता नहीं देते हैं।

नई दिल्ली: अब बाजार में कंपनियां ए1 और ए2 के नाम से दूध, घी और मक्खन नहीं बेच सकेंगी। दरअसल, खाद्य सुरक्षा नियामक FSSAI ने गुरुवार को ई-कामर्स कंपनियों सहित सभी खाद्य कारोबारियों को पैकेजिंग के ऊपर से ए1 और ए2 प्रकार के दूध और दूध उत्पादों के दावों को हटाने का निर्देश दिया है।

भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI) ने कहा कि ये दावे खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 के अनुरूप नहीं हैं।

ए1 और ए2 दूध में अंतर

FSSAI ने कहा कि उसने ए1 और ए2 संबंधी दावों के मुद्दों की जांच की और पाया कि ए1 और ए2 दूध में अंतर बीटा कैसिन प्रोटीन की संरचना से जुड़ा है, जो गाय की नस्ल के आधार पर भिन्न होता है। नियामक ने कहा कि वर्तमान में जो नियम हैं, वह इस अंतर को मान्यता नहीं देते हैं।

नियामक ने कहा, उसने दूध का व्यवसाय करने वाली कंपनियों से अपने उत्पादों से ऐसे दावों को हटाने का निर्देश दिया है। साथ ही ई-कामर्स प्लेटफार्म को भी अपने उत्पादों और वेबसाइटों से इन दावों को तुरंत हटाने के लिए कहा गया है। कंपनियों को पहले से ही मुद्रित पैकेजिंग को खत्म करने के लिए छह महीने का समय दिया गया है और भविष्य में इस समयसीमा को नहीं बढ़ाया जाएगा।

निर्देश का सख्ती से अनुपालन

नियामक ने इस निर्देश का सख्ती से अनुपालन करने का निर्देश दिया है। आदेश का स्वागत करते हुए पराग मिल्क फूड्स के चेयरमैन देवेंद्र शाह ने कहा कि एफएसएसएआइ का आदेश सही दिशा में उठाया गया कदम है। उन्होंने कहा कि ए1 और ए2 दावे मार्केटिंग रणनीति के तहत गढ़े गए शब्द हैं। यह जरूरी है कि उपभोक्ताओं को गलत जानकारी देने वाले भ्रामक दावों को हम खत्म करें। उन्होंने कहा कि ए1 या ए2 दूध उत्पाद श्रेणी कभी अस्तित्व में नहीं थी और वैश्विक स्तर पर भी यह प्रवृत्ति खत्म हो रही है।

ए1-यूरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड से आने वाली विदेशी गायों का दूध ए1 होता है। ए1 बीटा कैसिन में पेप्टाइड्स को अमीनो एसिड्स में ब्रेक नहीं किया जा सकता। इसी कारण से ये पचाने योग्य नहीं होता है, जो कई तरह के रोगों को जन्म देता है।ए2-ए2 बीटा कैसिन भारत की गायों से मिलने वाला दूध है। दरअसल, दूध में जो प्रोटीन होता है, वह पेप्टाइड्स में तब्दील होता है। बाद में यह अमीनो एसिड्स का स्वरूप लेता है। इस तरह का दूध पचाने में आसान रहता है।

पहली तिमाही में कम हो सकती है इकोनॉमिक ग्रोथ, ICRA ने 6 फीसदी रहने का जताया अनुमान

रेटिंग एजेंसी (ICRA) ने अनुमान जताया कि FY25 की पहली तिमाही यानी अप्रैल-जून के इकोनॉमिक ग्रोथ में नरमी आ सकती है। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि पहली तिमाही में इकोनॉमिक ग्रोथ 6 प्रतिशत हो सकता है। अगर इतना होता है तो यह छमाही के निचले स्तर पर आ गया। हालांकि पूरे वित्त वर्ष में जीडीपी ग्रोथ 6.8 प्रतिशत की दर से बढ़ेगा।

नई दिल्ली। रेटिंग एजेंसी इक्रा (ICRA) ने अनुमान जताया है कि चालू वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही यानी अप्रैल-जून में भारत की इकोनॉमिक ग्रोथ 6 प्रतिशत पर आ जाएगी। यह छह तिमाही का निचले स्तर है। हालांकि, एजेंसी ने कहा की पूरे वित्त वर्ष के लिए सकल घरेलू उत्पाद 6.8 प्रतिशत बढ़ेगा, जो कि पिछले वित्त वर्ष यानी 2023-24 में दर्ज 8.2 फीसदी से कम है।

इक्रा के अनुसार पहली तिमाही में सरकारी पूंजीगत व्यय में संकुचन और शहरी उपभोक्ता मांग में गिरावट की वजह से आर्थिक वृद्धि में गिरावट आ सकती है।

30 अगस्त को जारी होगा डेटा

रेटिंग एजेंसी इक्रा के बयान के अनुसार सरकारी पूंजीगत व्यय में संकुचन और गिरावट के बावजूद वर्ष-दर-वर्ष (YoY) के आधार पर भारत का जीडीपी विस्तार का अनुमान लगाया। चालू कारोबारी साल की पहली तिमाही में इकोनॉमिक ग्रोथ 6 प्रतिशत तक रह सकता है। जबकि, पिछले वित्त वर्ष की चौथी तिमाही में इकोनॉमिक ग्रोथ 7.8 फीसदी थी।

30 अगस्त 2024 (शुक्रवार) को MoSPI (सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय) द्वारा जून तिमाही के वृद्धि का आधिकारिक डेटा जारी होगा। वित्त वर्ष 2023-24 के जून तिमाही में इकोनॉमिक ग्रोथ 8.2 फीसदी थी।

इसके आगे अदिति नायर ने कहा भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के उपभोक्ता विश्वास सर्वेक्षण के अनुसार शहरी उपभोक्ता विश्वास में आश्चर्यजनक गिरावट दर्ज की गई है। इस बीच पिछले साल के प्रतिकूल मानसून के लंबे समय तक बने रहने वाले प्रभाव और 2024 के मानसून की असमान शुरुआत ने ग्रामीण धारणा में व्यापक सुधार को रोक दिया।

हीटवेव का पड़ा असर

नायर ने कहा कि हीटवेव ने विभिन्न सेवा क्षेत्रों में लोगों की संख्या को भी प्रभावित किया, हालांकि इससे पावर डिमांड में शानदार तेजी देखने को मिली। नयार ने अनुमान जताया है कि Q1 FY25 में भारत के GVA (सकल मूल्य वर्धित) 5.7 प्रतिशत और GDP (सकल घरेलू उत्पाद) 6 प्रतिशत रहने की उम्मीद है।

पांच वर्ष में दोगुना हो जाएगा गोल्ड लोन बाजार का आकार, रिपोर्ट में खुलासा

वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान संस्थागत गोल्ड लोन बाजार में पर्याप्त वृद्धि रही है और इसका आकार 7.1 लाख करोड़ रुपये हो गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय परिवारों के पास भारी मात्रा में सोना है और इनके पास 25 हजार टन सोना होने का अनुमान है। इस सोने का मौजूदा मूल्य करीब 126 लाख करोड़ रुपये है।

नई दिल्ली। सख्त नियमों के चलते वृद्धि में नरमी के बावजूद देश के संस्थागत गोल्ड लोन बाजार का आकार अगले पांच वर्षों के दौरान दोगुना होकर 14.19 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच सकता है। सलाहकार फर्म पीडब्ल्यूसी इंडिया ने एक रिपोर्ट में यह बात कही है।

गोल्ड लोन बाजार में पर्याप्त वृद्धि

रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान संस्थागत गोल्ड लोन बाजार में पर्याप्त वृद्धि रही है और इसका आकार 7.1 लाख करोड़ रुपये हो गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2028-29 तक 14.85 प्रतिशत वर्ष-दर वर्ष वृद्धि के साथ इसके लगभग 14.19 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने की उम्मीद है।

भारतीय परिवारों के पास भारी मात्रा में सोना

रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय परिवारों के पास भारी मात्रा में सोना है और इनके पास 25 हजार टन सोना होने का अनुमान है। इस सोने का मौजूदा मूल्य करीब 126 लाख करोड़ रुपये है। रिपोर्ट के अनुसार, नियामकीय प्राधिकरणों की ओर से सख्ती बढ़ने के कारण अगले दो वर्षों के दौरान गोल्ड लोन बाजार की वृद्धि में नरमी रह सकती है।

आरबीआइ ने गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) को गोल्ड लोन के तौर पर 20 हजार से ज्यादा राशि नकद में नहीं देने की सलाह दी है। इससे ग्राहक गैर-संस्थागत क्षेत्र की ओर से रुख कर सकते हैं।

नियामकीय सख्ती और गाइडलाइंस में संशोधन के कारण प्रमुख एनबीएफसी के शेयरों में भी गिरावट आई है।रिपोर्ट में कहा गया है कि बीते वित्त वर्ष के दौरान सोने की कीमतों में तेज वृद्धि रही है। इस कारण भी गोल्ड लोन देने वाले ब्याज दरों और मूल्य निर्धारण को लेकर सतर्क रुख अपना सकते हैं।

पिछले वित्त वर्ष में नई नौकरियों में सिर्फ 1.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी, बैंक आफ बड़ौदा ने शेयर की रिपोर्ट

परिवहन विशेष न्यूज

बैंक आफ बड़ौदा की नई रिपोर्ट में पता चला है कि पिछले वित्त वर्ष में नई नौकरियों में सिर्फ 1.5 प्रतिशत ही बढ़ी है। रिपोर्ट में बताया कि 2024 तक 1196 कंपनियों में कुल रोजगारों की संख्या 6251808 थी। वित्त वर्ष 2023-24 में 8.2 प्रतिशत की मजबूत आर्थिक वृद्धि दर के बावजूद कई कंपनियों ने अपने कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने के बजाय स्किल पर ध्यान दिया।

नई दिल्ली: वित्त वर्ष 2023-24 में रोजगार सृजन में मात्र 1.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि वित्त वर्ष 2022-23 में इसमें 5.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई थी। बैंक आफ बड़ौदा की एक रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 2023-24 में भारतीय उद्योग जगत ने केवल 90,840 नौकरियां सृजित कीं, जबकि पिछले वर्ष यानी 2022-23 में यह आंकड़ा 3.33 लाख था।

मार्च, 2024 तक 1,196 कंपनियों में कुल रोजगारों की संख्या 62,51,808 थी, जो बदलती आर्थिकी परिस्थिति में यह दर्शाता है कि कंपनियां नई भर्तियों को लेकर सतर्क रुख अपना रही हैं।

रिपोर्ट में मिली जानकारी

रिपोर्ट में तीन सेक्टरों (नौकरी बढ़ाने वाले', 'नौकरी देने वाले' और जहां नौकरियों की संख्या स्थिर रही) के तौर पर वर्गीकृत किया गया है। रिटेल और ट्रेडिंग जैसे सेक्टर नौकरी पैदा करने वाले सेक्टर के तौर पर उभरे हैं और इनकी वृद्धि दर क्रमशः 19.4 प्रतिशत और 16.2 प्रतिशत रही।

दूसरी ओर, सूचना-प्रौद्योगिकी और टेक्सटाइल सेक्टर को नौकरी खत्म करने वाले सेक्टर के तौर वर्गीकृत किया गया है। ये ऐसे सेक्टर हैं, जहां पुनर्गठन के चलते कर्मचारियों की संख्या में कमी आई है। दिलचस्प तथ्य यह है कि बिक्री वृद्धि और रोजगार सृजन के बीच कोई सीधा संबंध स्पष्ट नहीं है।

वित्त वर्ष 2023-24 में 8.2 प्रतिशत की मजबूत आर्थिक वृद्धि दर के बावजूद, कई कंपनियों ने अपने कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने के बजाय स्किल पर ध्यान दिया। उदाहरण के लिए, सूचना-प्रौद्योगिकी (आइटी) क्षेत्र ने 5.6 प्रतिशत की मामूली बिक्री वृद्धि दर्ज की, लेकिन फिर भी अपने कर्मचारियों की संख्या में कमी की, जिससे पता चलता है कि अब रोजगार संबंधी निर्णयों में तात्कालिक बिक्री आंकड़ों की

तुलना में दीर्घकालिक व्यावसायिक लक्ष्य अधिक प्रभावशाली हैं।

विदेश से भारत में नौकरी खोजने वालों की सख्या बढ़ी

समग्र आर्थिक विकास के बीच जून, 2021 से विदेश से भारत में नौकरी खोजन वाले लोगों की संख्या में 60 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। प्रमुख वैश्विक भर्ती कंपनी इंडीड के आंकड़ों के अनुसार, देश तेजी से प्रतिभाओं के लिए एक शीर्ष गंतव्य बनता जा रहा है।

जिन देशों से लोग भारत में नौकरी खोज रहे हैं, उसमें संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), अमेरिका और ब्रिटेन शीर्ष पर हैं। जून, 2021 से जून, 2024 के बीच इन देशों से भारत में नौकरी खोजने वालों की संख्या में क्रमशः 13 प्रतिशत, 12 प्रतिशत और सात प्रतिशत की वृद्धि हुई। एक खास बात यह है कि इसी समयावधि में भारत से दुनियाभर में नौकरी खोजने में 17 प्रतिशत की गिरावट आई है।

ज्यादा रिटर्न और अंतिम समय में आईटीआर दाखिल होने से रिफंड में देरी

जानकारी मिली है कि पिछले साल की तुलना में इस साल काफी अधिक आईटीआर (इनकम टैक्स रिटर्न) फाइल किए गए है। जिस कारण इस साल इनकम टैक्स रिफंड मिलने में देरी हो सकती है। इसके अलावा आखिरी दिनों में 2 करोड़ से अधिक लोगों के ITR फाइलिंग के कारण भी ऐसा हो रहा है क्योंकि वेरिफिकेशन में बहुत अधिक समय जा रहा है।

नई दिल्ली: इनकम टैक्स रिफंड मिलने में इस साल देर हो रही है। पिछले साल 7-10 दिनों में लोगों को रिफंड मिल जा रहा था जबकि इस बार एक माह बीत जाने के बाद भी लोगों को रिफंड नहीं मिले है। इस मामले में आयकर विभाग का कहना है कि पहला कारण यह है कि पिछले साल की तुलना में इस साल काफी अधिक आईटीआर (इनकम टैक्स रिटर्न) भरे गए।

दूसरी वजह यह है कि 31 जुलाई आईटीआर भरने का अंतिम समय था और आखिर के तीन-चार दिनों में दो करोड़ से अधिक लोगों ने आईटीआर भरने का काम किया। इनके वेरिफिकेशन में वक्त लगेगा। इनकम टैक्स विभाग के मुताबिक मूल्यांकन वर्ष 2024-25 के लिए गत 31 जुलाई तक 7.28 करोड़ आईटीआर दाखिल किए गए जबकि पिछले साल 31 जुलाई तक 6.77 करोड़ आईटीआर दाखिल हुए थे।

इस साल दाखिल हुए 2.28 करोड़ ITR

गत 31 जुलाई तक 51 लाख अधिक आईटीआर भरे जा चुके थे। आईटीआर की संख्या अधिक होने से उनके वेरिफिकेशन में भी समय लगता है और इस वजह से भी रिफंड में कुछ देर हो सकती है। विभाग के वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक अब जिन लोगों ने जुलाई के आखिरी सप्ताह में रिटर्न भरा है, उनके रिफंड में अभी समय लग सकता है क्योंकि टीडीएस के सत्यापन में एक माह का समय लग जाता है।

इस साल 27 जुलाई से 31 जुलाई के बीच 2.28 करोड़ लोगों ने आईटीआर दाखिल किया। इन रिटर्न का वेरिफिकेशन 26-30 अगस्त के बीच होने की उम्मीद है। अधिकारी के मुताबिक वैसे भी नियम के मुताबिक रिटर्न भरने से लेकर 90 दिनों के भीतर रिफंड जारी किया जा सकता है।

TDS की जांच करता है टैक्स विभाग

इनकम टैक्स विभाग पहले टीडीएस की जांच करता है और सही दावा होने पर ही रिफंड जारी किया जाता है। इनकम टैक्स के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि अमेरिका जैसे देश में टीडीएस रिफंड तुरंत हो जाता है और वहां इस मामले में धोखाधड़ी भी खूब होती हैं। लेकिन भारत में जब विभाग आश्वस्त हो जाता है कि टीडीएस की रकम मिली है तभी रिफंड की प्रक्रिया शुरू की जाती है।

विभाग के अधिकारी के मुताबिक अमूमन रिफंड के खाते में आने तक चार-पांच सप्ताह का समय लग जाता है। अगर पांच सप्ताह के बाद भी रिफंड नहीं मिला है तो एक बार टैक्सपेयर को ऑनलाइन यह चेक कर लेना चाहिए कि आईटीआर में कहीं कोई कमी तो नहीं रह गई है। कमी होने पर विभाग टैक्सपेयर्स को ऑनलाइन इसकी सूचना भेज रहा है।

RBI गवर्नर बोले- मौजूदा परिस्थिति में ढील देने का कोई औचित्य नहीं

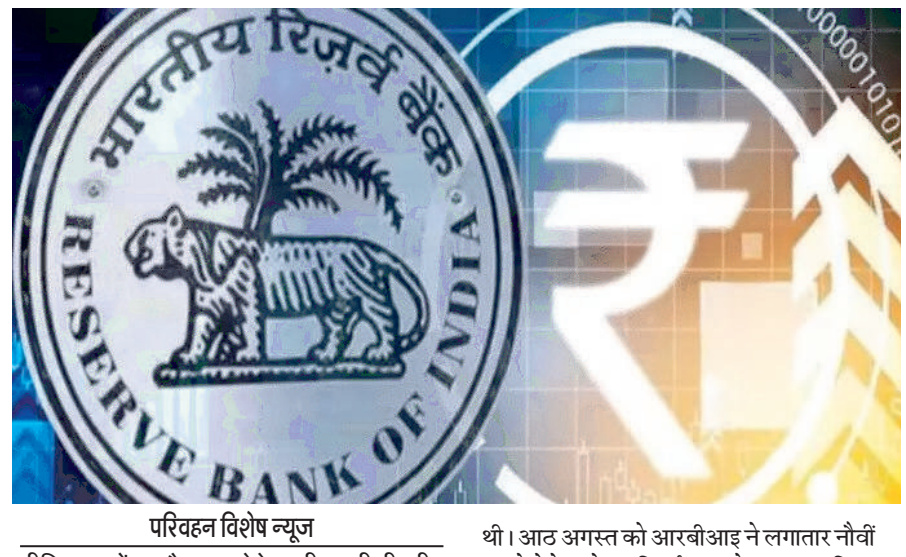

परिवहन विशेष न्यूज

नीतिगत दरों पर फैसला लेने वाली एमपीसी की बैठक छह से आठ अगस्त के बीच हुई थी और दो सदस्यों ने रेपो रेट को कम करने की वकालत की थी। आठ अगस्त को आरबीआइ ने लगातार नौवीं बार रेपो रेट को अपरिवर्तत रखने का एलान किया था। एमपीसी के दो अन्य सदस्यों आशिमा गोयल और जयंत आर वर्मा ने रेपो रेट में 25 आधार अंकों की कटौती की वकालत की।

नई दिल्ली। इस समय नीतिगत दरों में किसी तरह की ढील देने का कदम महंगाई को काबू में रखने की प्रक्रिया को पटरी से उतार सकता है। आरबीआइ गवर्नर शक्तिकांत दास ने मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की बैठक में रेपो रेट को 6.5 प्रतिशत पर बरकरार रखने के पक्ष में मतदान करते हुए यह बात कही थी।

लगातार नौंवी बार रेपो रेट अपरिवर्तत

नीतिगत दरों पर फैसला लेने वाली एमपीसी की बैठक छह से आठ अगस्त के बीच हुई थी और दो सदस्यों ने रेपो रेट को कम करने की वकालत की थी। आठ अगस्त को आरबीआइ ने लगातार नौवीं बार रेपो रेट को अपरिवर्तत रखने का एलान किया था और कहा था कि वह लगातार ऊंची बनी हुई खाद्य मुद्रास्फीति का जोखिम नहीं उठा सकता है।

7 से 9 अक्टूबर के बीच अगली बैठक

एमपीसी की अगली बैठक 7 से 9 अक्टूबर, 2024 के लिए निर्धारित है। गुरुवार को जारी किए गए एमपीसी बैठक के ब्योरे के अनुसार, आरबीआइ गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि 2024-25 के लिए 4.5 प्रतिशत सकल मुद्रास्फीति के लक्ष्य को अगर ध्यान में रखा जाए तो वर्तमान रेपो रेट पूरी तरह संतुलित है।

उन्होंने यह भी कहा कि मुद्रास्फीति धीरे-धीरे कम हो रही है, लेकिन इसकी गति धीमी और असमान है। डिप्टी गवर्नर और एमपीसी सदस्य देबब्रत पात्रा ने कहा कि सकल मुद्रास्फीति और खाद्य मुद्रास्फीति के बीच खाई बढ़ती जा रही है।

एमपीसी के दो अन्य सदस्यों आशिमा गोयल और जयंत आर वर्मा ने रेपो रेट में 25 आधार अंकों की कटौती की वकालत की। गोयल ने कहा कि भले ही आर्थिक वृद्धि ऊंची हो, लेकिन इसे अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचना होगा।

निगम के 270 सफाई कर्मियों को पक्के का तोहफा

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। दिल्ली नगर निगम में पिछले 27 साल से बतौर टेंम्परेरी भर्ती किए गए 270 सफाई कर्मचारियों को कमिश्नर अश्विन कुमार ने राखी का तोहफा देते हुए परमानेंट अप्रूवल करने के आदेश जारी कर दिए है। इससे वर्तमान में 50 साल से उपर की उम्र को छूने वाले सफाई कर्मियों में खुशी की लहर है। इस बावत एमसीडी सफाई कर्मचारी यूनियन के अध्यक्ष करण सिंह महरौलिया ने बताया कि यूनियन लंबे अर्से से बतौर टेम्परेरी सफाई कर्मचारियों को पक्का करने की लडाई लडती रही हैं। लेकिन निगम ने फिलहाल 270 कच्चे सफाई कर्मचारियों को ही पक्का किया है। यूनियन नेता महरौलिया ने बताया कि जनाब एमसीडी के 12 जोनों में अभी कुल 40000 सफाई कर्मचारी बतौर कच्चो के काम कर रहे है। जिनको पक्का करवाने के लिए यूनियन अपने स्तर पर संघर्ष कर रही है। फिलहाल अभी जिन्हें पक्का किया गया है वह साल 1998 से 2000 के बीच के भर्ती हुए है। अब तीन दशक बाद उन्हें पक्का किया गया है। महरौलिया के मुताबिक एमसीडी के रोहिणी जोन में अभी 6000 सफाई कर्मी लगे हुए है। वह भी सालों से पक्का होने का इंतजार कर रहे हैं। यूनियन प्रेसीडेंट करण सिंह महरौलिया ने बताया कि एमसीडी में लापरवाही बरते जाने का ये आलम है कि साल 2010 में कच्चो में भर्ती सफाई कर्मियों का रिकार्ड तक गायब है। उनको लेफ्ट आउट करार कर दिया गया है। ऐसे सफाई कर्मियों को सिविल लाइन जोन, सेंट्रल जोन, या अन्य जोनों में तबादले तो कर दिए पर उनका संबंधित रिकार्ड/ तक नही भेजा गया है। ऐसे 1000 कच्चे सफाई कर्मी महकमें में जोन और हेड क्वार्टर के बीच में पिस कर रह गए है। वह अपने पक्के होने की उम्मीद में अफसरों की ओर मुंह ताक रहे है। जबकि उनका रिकार्ड तक गायब है। जिस वजह से उनका नाम लिस्ट से गायब है। तब वह पक्के किस तरह से होगें? ये तो निगम के लापरवाह अधिकारियों को जवाब देना चाहिए। दरअसल, अधिकारियों की ऐसी घपलेबाजी ने 1 हजार से ज्यादा कच्चे सफाई कर्मियो का भविष्य अधर में लटका दिया है। यूनियन प्रेसीडेंट का कहना है कि पक्के होने वाले सफाई कर्मियों को हिंदूराव अस्पताल में मेडिकल करवाने की हिदायत दी गई हैं। जबकि मेडिकल चेक-अप निगम डिस्पेंसरियों में भी किया जा सकता है।बता दें कि हिंदूराव अस्पताल में बेतहाशा भीड के चलते मेडिकल चेक-अप में कर्मियों को परेशानी झेलनी पड़ती है। लिहाजा यूनियन की अधिकारियों से अपील है कि सफाई कर्मियों का मेडिकल चेक-अप निगम की डिस्पेंसरियो में कराया जाए। अध्यक्ष के मुताबिक लिहाजा पक्के होने वाले सफाई कर्मियों का मेडिकल चेक-अप अब निगम की डिस्पेंसरियों में किया जाएगा।

400 से अधिक लोग लेंगे अंगदान का संकल्प, गैर सरकारी संस्थाएं भी आईं वर्क के साथ

सुषमा रानी

नई दिल्ली: आम धारणा के विपरीत कि इस्लाम में अंगदान निषिद्ध है, वर्ल्ड आर्गेनाइजेशन ऑफ रिलीजन्स एंड नॉलेज (*वर्क*) इस भ्रांति को तोड़ने के लिए एक अभूतपूर्व पहल कर रहा है। वर्क ने 400 से अधिक लोगों को अंगदान के संकल्प के लिए एक मंच पर लाया है, जिनमें बड़ी संख्या में मुसलमान शामिल हैं। वर्क के अध्यक्ष अल्लामा सय्यद अब्दुल्लाह तारिक़ ने नई दिल्ली के प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में आयोजित एक प्रेस वार्ता के दौरान यह जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि अंगदान समाज में इस जीवन-रक्षक कार्य की व्यापक समझ और स्वीकृति को बढ़ावा देता है। इस अवसर पर, वर्क 36 उत्कृष्ट एनजीओ और व्यक्तियों को समाज और मानवता के प्रति उनके अद्वितीय योगदान के लिए सम्मानित करेगा, जो समाज और मानवता के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। वर्क के अनुसार, ये संगठन सामाजिक परिवर्तन की दिशा में अग्रणी रहे हैं, और उनके प्रयासों की सराहना करते हुए वर्क को गर्व महसूस होता है।

वर्क की केंद्रीय सचिव और वर्क महिला विंग की अध्यक्ष, सुमू तारिक ने बताया कि वर्क देश के 200 से ज्यादा जिलों और कई अन्य देशों में समाज की भलाई के लिए निरंतर काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि वर्क बिना किसी सरकारी या बाहरी वित्तीय सहायता के पूरी तरह से स्व-निधि से काम करता है। संगठन के सभी कार्यों के लिए वर्क के समर्पित स्वयंसेवक, जिन्हें 'वर्कर' कहा जाता है, मिलकर अपने संसाधन जुटाते हैं। यह आत्मनिर्भरता और सामूहिक प्रयास का अनोखा मॉडल वर्क के उस मिशन को दर्शाता है, जिसमें समाज की सेवा को ईमानदारी और स्वतंत्रता के साथ निभाया जाता है।

वर्क के दिल्ली चैप्टर के स्टेट हेड मुबश्शिर हुसैन ने कहा कि बीते 36 वर्षों से वर्क मानवता के प्रति समर्पित होकर सेवा मूलक कार्य कर रहा है और करुणा को बढ़ावा दे रहा है। 37वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में, वर्क समाज में अंगदान को लेकर फैली भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास कर रहा है। उन्होंने कहा कि वर्क का मिशन है कि दुनिया से शत्रुता और द्वेष की भावना को समाप्त कर ज्ञान का उजाला फैलाया जाए। जहां ज्ञान होगा, वहां से कुरीतियां स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी और लोगों में दया, करुणा, प्रेम, सौहार्द और सेवा की भावना जागृत होगी।

वर्क के दिल्ली चैप्टर की महिला प्रकोष्ठ की स्टेट हेड आसिया तारिख़ ने कहा कि 1988 में अपनी स्थापना के बाद से वर्ल्ड आर्गेनाइजेशन ऑफ रिलीजन्स एंड नॉलेज (वर्क) करुणा और सेवा का प्रतीक रहा है। विभिन्न पहलों के माध्यम से, वर्क ने समाज की बेहतरी में योगदान देते हुए आपसी समझ, शिक्षा और मानवीय प्रयासों को बढ़ावा देने का निरंतर प्रयास किया है।

सीरवी समाज ट्रस्ट जवाहर नगर बालाजी नगर का वार्षिक सम्मेलन 5 सितंबर को

परिवहन विशेष न्यूज

सीरवी समाज ट्रस्ट जवाहर नगर बालाजी नगर स्थित सीरवी समाज की आस्था का केन्द्र श्री आईमाता मंदिर में समाज बन्धुओं के सानिध्य में विशेष मीटिंग आयोजितकर श्री आईमाताजी के 609 वें अवतरण दिवस व आठवां वार्षिक सम्मेलन पर दो दिवसीय कार्यक्रम के तहत भादवा सुदी एकम बुधवार 4 सितंबर रात्रि जागरण व भादवा सुदी बीज (दूज) गुरुवार 5 सितंबर प्रातः वेला में पूजा- अर्चना व महाप्रसादी कार्यक्रम भव्य रूप से आयोजित किया जायेगा।

अध्यक्ष जयराम पंवार, सचिव हिरालाल चोयल ने संयुक्त रूप से बताया कि हर वर्ष की भांति समाज बन्धुओं के सानिध्य में दो दिवसीय भादवा सुदी बीज महोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। बुधवार 4 सितंबर प्रातः वेला में श्री आईमाता मंदिर को विशेष फूलों व लाइटिंग से सजाकर आई मां का विशेष श्रृंगारकर रात्रि 9.11बजे से जागरण आयोजित किया जाएगा। जिसमे आईमाता भजन मण्डली बालाजी नगर अचलाराम हाम्बड़ व मोहनलाल भायल माई के चरणों में भजनों के पुष्प अर्पित करेंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम 4.15 से 8 बजे तक (सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले को अपना नाम दिनांक 29 अगस्त 2024 तक सचिव महोदय को दिरावे। गणेश वंदना एवं आईमाता जी पुजा अर्चना श्री आईमाता जी की पूर्ण आरती गुरुवार 5 सितंबर प्रातः 9.15 बजे ज्योत प्रज्वलितकर, पुजा अर्चना, स्वागत, समाज बन्धुओं द्वारा आई मां के चरणों में श्रीफल भेंटकर परिवार के सुख-समृद्धि की कामना, समाज के बाल कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रातः 10 बजे से धर्मसभा का आयोजनकर अध्यक्ष जयराम पंवार की अध्यक्षता में मुख्य अतिथियों, पधारे मेहमानों का स्वागत, कोषाध्यक्ष नरेश कुमार सोलंकी द्वारा आय-व्यय का विवरण, पदाधिकारियों का सम्मान एवं अपने विचार व्यक्त करना, सचिव हिरालाल चोयल द्वारा समाज में किये गये विकासशील कार्यो का विवरण, एवं पधारे समाज बन्धुओं व भक्तों के लिए भोजन प्रसादी की व्यवस्था मंदिर प्रांगण में रहेगी। बीज महोत्सव कार्यक्रम में पदाधिकारी व कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्य पधारे भक्तों की सेवार्थ उपस्थित रहेंगे। समाज बन्धुओं से निवेदन है कि बीज महोत्सव पर अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर, समाज बन्धु सपरिवार पधारकर कार्यक्रम का लाभ लेवे। अध्यक्ष द्वारा सम्बोधन भाषण व धन्यवाद प्रस्ताव, महाआरती के पश्चात कार्यक्रम का समापन्न होगा।

सीरवी समाज कोरेमुला बडेर का वार्षिक सम्मेलन 5 सितंबर को

परिवहन विशेष न्यूज

सीरवी समाज कोरेमुला स्थित सीरवी समाज की आस्था का केन्द्र श्री आईमाता मंदिर में समाज बन्धुओं के सानिध्य में विशेष मीटिंग आयोजितकर श्री आईमाताजी के 609 वें अवतरण दिवस व दसवां वार्षिक सम्मेलन पर दो दिवसीय कार्यक्रम के तहत भादवा सुदी एकम बुधवार 4 सितंबर रात्रि जागरण व भादवा सुदी बीज (दूज) गुरुवार 5 सितंबर प्रातः वेला में पूजा- अर्चना व महाप्रसादी कार्यक्रम भव्य रूप से आयोजित किया जायेगा। संरक्षक प्रभुराम परिहारिया

अध्यक्ष कालुराम काग, सचिव डायाराम लचेटा ने संयुक्त रूप से बताया कि हर वर्ष की भांति समाज बन्धुओं के सानिध्य में दो दिवसीय भादवा सुदी बीज महोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। बुधवार 4 सितंबर प्रातः वेला में श्री आईमाता मंदिर को विशेष फूलों व लाइटिंग से सजाकर माई का विशेष श्रृंगारकर रात्रि 9.11बजे से जागरण आयोजित किया जाएगा। जिसमे सुरेश कुमार ईडवा एण्ड पार्टी राजस्थान आई मां के चरणों में भजनों के पुष्प अर्पित करेंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम 3.15 से 8.30 बजे तक (सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले को अपना नाम दिनांक 29 अगस्त 2024 तक सचिव महोदय को दिरावे। गणेश वंदना एवं आईमाता जी पुजा अर्चना श्री आईमाता जी की पूर्ण आरती गुरुवार 5 सितंबर प्रातः 9.15 बजे ज्योत प्रज्वलितकर, पुजा अर्चना, स्वागत, समाज बन्धुओं द्वारा आई मां के चरणों में श्रीफल भेंटकर परिवार के सुख-समृद्धि की कामना, समाज के बाल कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रातः 10 बजे से धर्मसभा का आयोजनकर अध्यक्ष कालुराम काग की अध्यक्षता में मुख्य अतिथियों, पधारे मेहमानों का स्वागत, कोषाध्यक्ष पोकरराम पंवार द्वारा आय-व्यय का विवरण, पदाधिकारियों का सम्मान एवं अपने विचार व्यक्त करना, राजाराम गहलोत मंदिर का आय विवरण पेश किया जाएगा।सचिव डायाराम लचेटा द्वारा समाज में किये गये विकासशील कार्यो का विवरण, एवं पधारे समाज बन्धुओं व भक्तों के लिए भोजन प्रसादी की व्यवस्था मंदिर प्रांगण में रहेगी। बीज महोत्सव कार्यक्रम में पदाधिकारी व कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्य पधारे भक्तों की सेवार्थ उपस्थित रहेंगे। समाज बन्धुओं से निवेदन है कि बीज महोत्सव पर अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर, समाज बन्धु सपरिवार पधारकर कार्यक्रम का लाभ लेवे। अध्यक्ष द्वारा सम्बोधन भाषण व धन्यवाद प्रस्ताव, महाआरती के पश्चात कार्यक्रम का समापन्न होगा।

फ्रेशर्स ओरिएंटेशन कार्यक्रम में दिए कुलपति प्रो करुणेश सक्सेना ने सफलता के मंत्र

दीक्षारंभ फ्रेशर्स ओरिएंटेशन कार्यक्रम में दिए कुलपति प्रो करुणेश सक्सेना ने सफलता के मंत्र

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाडा। संगम विश्वविधालय के प्रथम वर्ष के नवीन छात्र छात्राओं के लिए दीक्षारंभ 2024 ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया।ओरिएंटेशन कार्यक्रम के प्रथम दिन संगम सभागार में कार्यक्रम आयोजित किया गया।कार्यक्रम की शुरुआत नवीन छात्र छात्राओं के स्वागत तथा कुलगीत के साथ किया गया। शुरुआती उद्बोधन विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो राजीव मेहता ने सभी नवीन छात्रों का संगम विश्वविद्यालय मैं स्वागत किया तथा बताया कि कड़ी मेहनत एवं लगन आने वाले तीन साल में करके छात्र अपने सारे सपनों को पूरा कर सकता है तथा विश्वविद्यालय के इतिहास तथा क्रियाकलापों की जानकारी दी।मुख्य अतिथि सृजन संस्थान की अध्यक्ष ममता मोदानी ने भी नवीन छात्र छात्राओं को सृजन संस्थान के कार्यों तथा समाज सेवा का आहवान किया।कुलपति प्रो डा करूणेश सक्सेना ने विश्वविद्यालय परिवार के सभी फैकल्टी स्टाफ का परिचय दिया तथा जीवन में सफलता को प्राप्त करने के लिए छोटे छोटे उदाहरण प्रस्तुत किए।प्रो सक्सेना ने छात्र छात्राओं से खचाखच भरे सभागार में अपने मोटिवेशनल उद्बोधन से समा बांध दिया।बताया की व्यक्ति के अनिंग उसकी लर्निंग में निहित है।विख्यात कवि योगेन्द्र शर्मा ने अपनी कविताओं से सभी का मन मोह लिया।द्वितीय चरण में विश्वविद्यालय के सीनियर छात्रों ने शिव डांस तथा बैंड की रंगारंग प्रस्तुति से समा बंद दिया। प्रो वीसी प्रो मानस रंजन पाणिग्रही ने विश्वविद्यालय के अन्य क्रियाकलापों तथा एकेडमिक नियमों की जानकारी दी।मुख्य अतिथि के द्वारा एन ई पी पुस्तक,बाई एनुअल पत्रिका प्रतिबिंब का अनावरण ,तथा स्कूल ऑफ आर्ट्स तथा लॉ डिपार्टमेंट के न्यूजलेटर का अनावरण किया गया।ओरिएंटेशन कार्यक्रम समन्वयक डा विनेश अग्रवाल ने अगले दो दिन की रूप रेखा से अवगत कराया तथा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।कार्यक्रम समिति के सदस्य डा अनुराग शर्मा , डा अमित जैन,डा लोकेश त्रिपाठी ने ओरिएंटेशन के एजेंडा को साजा किया तथा मानसिक योग्यता के खेल खिलाए।कार्यक्रम में नवीन छात्रों के अलावा,सभी संकाय के फैकल्टी,डीन,हेड,एनसीसी, एनएसएस छात्र आदि उपस्तीथ थे।कार्यक्रम का कुशल संचालन छात्र हर्ष सोमानी, आंचल चौधरी ने किया।कार्यक्रम की सफलता में डा विकास सोमानी, डा श्वेता बोहरा,लेफ्टीनेंट डा राजकुमार जैन, डा पूनम चौहान, नेहा शब्बरवाल, डा किशोर सिंह,पवन अत्रे,महावीर पारीक आदि का विशेष सहयोग रहा।

सेन्ट जोहन एम्बुलेंस ब्रिगेड दिल्ली स्कुली छात्र छात्राओं को जीवन रक्षक प्रशिक्षण देकर नागरिकों के जीवन को बचाने के लिये तैयार कर रही है

आपातकालीन प्रतिक्रिया और सीपीआर प्रदर्शन पर विशेष सत्र
स्कूल: राजकीय. बॉयज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल, खानपुर, नईदिल्ली-110062 स्कूल आईडी: 1923069

नईदिल्ली। दिल्ली ब्रिगेड ने गवर्नमेंट: बॉयज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल, खानपुर, न्यू में एक विशेष सत्र का आयोजन किया दिल्ली-110062, 20 अगस्त 2024 को। सत्र का उद्देश्य जागरूकता पैदा करना और विकास करना है हृदय और श्वसन संबंधी आपात स्थितियों से निपटने के बारे में युवाओं और बच्चों के बीच समझ। यह इसमें सुरक्षा निर्देश, पहचान और चरण-दर-चरण कार्रवाइयां, और सीपीआर का प्रदर्शन शामिल था (हृदय व फेफड़ों को पुनर्जीवन)। कोविड-19 के बाद, कई लोगों को लंबे समय तक रहने वाले लक्षणों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे खतरा बढ़ गया है गंभीर हृदयाघात, विशेषकर युवा लोगों में।

इस सत्र में स्कूल के प्रधानाचार्य और सहित पंद्रह शिक्षकों और 520 छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया अन्य शिक्षक और प्रबंधन समिति के सदस्य अपनी अटूट प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करते हुए उपस्थित रहकर छात्र का कल्याण करें। यह सामूहिक प्रतिबद्धता सर्वत्र स्पष्ट थी सत्र, जो शाम 4.30 से 6.30 बजे तक आयोजित किया गया था। सत्र के अंत में, प्रतिभागी थे प्रभावी सीपीआर के लिए प्रश्न पूछने और सही तकनीकों के साथ डमी पर अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित किया गया परिणाम. प्रतिभागियों ने किसी हताहत को संभालने और स्थानांतरित करने के कौशल का भी अभ्यास किया। यह सत्र था छात्रों और शिक्षकों की उत्साहपूर्ण बातचीत और प्रतिक्रियाओं के साथ संपन्न हुआ।

श्री पी ड़ी वर्खिंया सहायक आयुक्त के नेतृत्व में दक्षिण-पूर्व और दक्षिण जिलों की दिल्ली ब्रिगेड टीम। श्री दिनेश कुमार कोर्प्स कमांडर, सुश्री मोनिका, कोर अधिकारी (नर्सिंग), श्री. श्याम, कोर अधिकारी, और दलीप कुमार, सत्र का आयोजन एवं संचालन डिवीजनल कमांडर ने संयुक्त रूप से किया. संचालन आशीष प्रकाश जी ने किया स्कूल प्रशासन के साथ. स्कूल प्राधिकारियों ने सत्र की सराहना की और अपना अभिव्यक्त किया इसके द्वारा प्रदान किए जाने वाले मूल्यवान जीवन-रक्षक ज्ञान को पहचानते हुए, इसे और अधिक स्कूलों तक विस्तारित करने की इच्छा है। यह स्वीकृति दिल्ली ब्रिगेड द्वारा किए जा रहे कार्यों के महत्व का एक प्रमाण है, और यह जीएनसीटी दिल्ली के सभी शैक्षणिक संस्थानों में इस जागरूकता को फैलाने के हमारे समर्पण को बढ़ावा देता है आज के संदर्भ में महत्वपूर्ण है.।

हैवान और दरिंदे

इन हैवान और दरिंदो में
जीवित रममताऱ नहीं,
जो रममताऱ हैं,
उसमें कोई क्षमता नहीं.
गर होती तो वे
नेस्तनाबूत हो जाते.
होता क़ानून का राज,
तो हौसले पस्त हो जाते.
न होता शील भंग,
न जाती किसी की जान.
यू सहज ही नहीं उड़ जाते,
किसी बहन-बेटी के प्राण.
हे भस्मासूरों तुम्हें है,
कितनी रतनऱ की भूख
नज़र ही नहीं आता दु:ख.
क्या? अब मिला पाओगे,
अपनी माँ-बहन से निगाहें,
झुकेंगी नज़र गाहे-बगाहे.
काश, जागी होती रममताऱ
सारा देश नतमस्तक हो,
सम्मान में नमन करता.

संजय एम. तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023